सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 58, नई दिल्ली । शुक्रवार, 10 मई 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जो लोग गिरने से डरते हैं वह कभी भी जीवन में उड़ान नहीं भर सकते।

03 जमानत देने से इनकार करने के निर्णय को के. कविता ने हाई कोर्ट में दी चुनौती
06 तेरा मंगल होये रे
08 नबीन पटनायक सब कुछ पंडियन को दे दिया....

सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा : अपने अनमोल जीवन की रक्षा करें: दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनने का महत्व

ऐसी दुनिया में जहां जीवन सबसे कीमती उपहार है, सुरक्षा सुनिश्चित करना सर्वोपरि होना चाहिए, खासकर जब दोपहिया वाहन चलाने की बात आती है। हेलमेट पहनने का सरल कार्य जीवन और मृत्यु के बीच एक बड़ा अंतर ला सकता है, फिर भी सुविधा के लिए इसे अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है या उपेक्षा की जाती है।

चलो सामना करते हैं; हेलमेट पहनने का मतलब सिर्फ जुर्माने से बचना या कानून प्रवर्तन की सतर्क नजरों से बचना नहीं है। यह सड़क पर जीवन की अप्रत्याशितता से स्वयं को सुरक्षित रखने के बारे में है। हालांकि कुछ लोगों को यह मामूली असुविधा लग सकती है, लेकिन हेलमेट न पहनने के परिणाम भयावह हो सकते हैं।

यह सच है कि कुछ लोग पुलिस चौकियों से बचकर या जुर्माने से बचकर कानून को दरकिनार करने का प्रयास कर सकते हैं, लेकिन एक इकाई है जिसे मूर्ख नहीं बनाया जा सकता है - मृत्यु के देवता यमराज। किसी भी तरह की चालाकी या टाल-मटोल सड़क पर लापरवाह व्यवहार के अपरिहार्य परिणामों को मात नहीं दे सकती।

इस मुद्दे की गंभीरता को समझते हुए, दून पुलिस ने सार्वजनिक सुरक्षा के हित में एक हार्दिक याचिका जारी की है। उनका संदेश स्पष्ट है: हेलमेट पहनना सिर्फ एक कानूनी आवश्यकता नहीं है; यह स्वयं के प्रति और उन लोगों के प्रति एक नैतिक दायित्व है जो हमारी परवाह करते हैं।

तो, आइए इस कॉल टू एक्शन पर ध्यान दें। आइए सतर्क रहें, सुरक्षित रहें और हमेशा यातायात नियमों का पालन करें। ऐसा करके, हम न केवल अपने जीवन की रक्षा करते हैं बल्कि अपनी सड़कों को सभी के लिए सुरक्षित बनाने में भी योगदान देते हैं।

जीवन की भव्यता में, आइए सुनिश्चित करें कि प्रत्येक धागा सावधानी और विचारपूर्वक बुना जाए। आइए सुरक्षा को प्राथमिकता दें, क्योंकि अंततः, जीवन के उपहार से अधिक मूल्यवान कुछ भी नहीं है।

डॉ अंकुर शरण
सड़क सुरक्षा विशेषज्ञ
सड़क सुरक्षा ओमनी फाउंडेशन
roadsafetysquad@gmail.com

लेखन देश हित में

आइये! अब अपनी कलम उठाए और लिखें अपने लेख देश हित के लिए
आप आलेख लिखने में रुचि रखते हैं और अपने विचारो को देश भर में पहुँचाना चाहते हैं, तो **परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र** पहुँचाएगा आपकी बात लाखों पाठकों तक

विशेषत: हम निम्नांकित विषयों पर आलेख प्रकाशित करते हैं -

1. देश की वर्तमान परिस्थिति तथा देश के समक्ष खड़ी चुनौतियों (नौकरी, रोजगार, एवम् अन्य) से जुड़े विषय
2. भारत देश के किसी भी राज्य के परिवहन विभाग एवम् प्रवर्तन शाखा (पुलिस, यातायात पुलिस, आरटीओ) से जुडे विषय,
3. देश में सड़क एवम् महिला सुरक्षा से जुड़े विषय,
4. देश की आन्तरिक सुरक्षा से जुड़े विषय,
5. भारत की सभ्यता, संस्कृति, राष्ट्रीय गौरव आदि से जुड़े विषय

आप हमें अपने लेख और विवरण नीचे बताए माध्यमों से भेज सकते हैं -
› व्हाट्सऐप नम्बर - +91 9212122095
› ई-मेल - newstransportvishesh@gmail.com

दिल्ली पुलिस के हवलदार ने मधुबन चौंक पर खोला पहला हेल्मेट बैंक

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अगर बाइक से निकले हैं और आपके पास हेलमेट नहीं है तो परेशान होने की जरूरत नहीं है। आपकी समस्या के समाधान के लिए अब हेलमेट बैंक खुल गया है। यहां से कोई भी दोपहिया वाहन चालक पहचान पत्र दिखाकर, मोबाइल नंबर और वाहन नंबर लिखवाकर बिना कोई शुल्क दिए आइएसआइ मार्क हेलमेट ले जा सकता है और 24 घंटे के अंदर हेलमेट वापस कर सकता है।

सुबह 8 से रात 8 बजे तक मिलेगी यह सुविधा

फिलहाल, यह सुविधा पीतमपुरा के मधुबन चौक पर मिल रही है। इसकी शुरुआत दिल्ली पुलिस के हेड कांस्टेबल संदीप शाही ने किया है। दिल्ली में बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं से चिंतित शाही ने इसे स्थापित किया है और यह सुविधा सुबह आठ बजे से रात आठ बजे तक मिलेगी। हेलमेट बैंक बनाने का मकसद दोपहिया वाहन चालकों को सुरक्षित करने की अलग पहल है। सड़क सुरक्षा में सराहनीय कार्य करने के लिए दिल्ली के पुलिस आयुक्त की ओर से सम्मानित संदीप शाही ने समय-समय पर इनाम के रूप में मिली राशि का उपयोग इस हेलमेट बैंक को खोलने में किया है। संदीप अब दिल्ली पुलिस की पीसीआर यूनिट में तैनात हैं। वे सात वर्षों से सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। वे जन्मदिन, शादी की सालगिरह, रक्षाबंधन और खुशियों के मौके पर वेतन से बचत कर बिना हेलमेट वाले दोपहिया चालकों को हेलमेट पहनाकर जागरूक करते हैं। वे 2400 हेलमेट बांट चुके हैं।

ऐसे आया हेलमेट बैंक खोलने का आइडिया

हेड कांस्टेबल संदीप शाही को हेलमेट बैंक खोलने का आइडिया उस समय आया जब एक बार मेट्रो से सफर के बाद उन्हें अपने संबंधी के साथ मोटरसाइकिल से आगे की यात्रा करनी थी और उनके पास हेलमेट नहीं था। तभी उन्होंने सोच लिया था कि इसको लेकर कुछ पहल करेंगे और अंततः हेलमेट बैंक खोल दिया। संदीप शाही का कहना है कि कई बार लोगों को किसी के साथ जाने या रास्ते में किसी जानकार दोपहिया वाहन चालक के साथ सफर करने के लिए एक दो घंटे के लिए हेलमेट की आवश्यकता होती है। ऐसे में इंसान एक-दो घंटे के लिए हजार रुपये का हेलमेट नहीं लेता है और बिना हेलमेट ही अपनी यात्रा करता है, जिससे उसकी जान खतरे में पड़ जाती है। यही सोचकर इस हेलमेट बैंक को बनाया गया है, जिससे ऐसे लोग बिना हेलमेट न चलें।

संस्कारशाला : सृष्टि द्वारा रिक्शा चालकों संग मनाया मज़दूर दिवस

गमछा गर्ल के नाम से विख्यात हुई फरीदाबाद की सृष्टि गुलाटी

परिवहन विशेष न्यूज

फरीदाबाद। मज़दूर दिवस के उपलक्ष में नन्ही सृष्टि गुलाटी की ओर से सेक्टर 15 गुरद्वारे के सामने, दशहरा मैदान के पास, प्याली चौक और 60 फीट रोड जवाहर कॉलोनी फरीदाबाद हरियाणा में गमछे, पानी की बोतले और जूस वितरण किया गया।

फरीदाबाद हरियाणा के डी.सी. मॉडल. सीनियर. सेकेंडरी स्कूल में कक्षा 3 की छात्रा सृष्टि गुलाटी द्वारा रिक्शा चालकों और श्रमिक वर्ग के लोगो को को 150 साफी (गमछे), 100 ठंडे पानी की बोतले, 100 जूस की बोतल और 200 पानी की थैली वितरित कर मज़दूर दिवस मनाया गया। रिक्शा चालको और श्रमिक वर्ग के लोगो ने अनोखे अंदाज में मनाए गए इस मज़दूर दिवस पर सभी ने सृष्टि गुलाटी और उसके प्रयास की सराहना की। इसके साथ ही सदा ऐसे ही नेक कार्यों को करने के लिए आशिर्वाद दिया। रिक्शा चालको और श्रमिक वर्ग के लोगो की खुशी देखते ही बन रही थी। गमछे पाकर बहुत ही खुश नजर आए ओर बच्ची को अनेकों शुभकामनाएं दीं। ऐसे ही अनेक नेक कामों के लिए जानी जाती हैं फरीदाबाद हरियाणा की गमछा गर्ल सृष्टि गुलाटी। सभी ने एक स्वर में कहा की बहुत ही कम लोग होते हैं इस दुनिया में जो अपने साथ सभी के बारे में सोचते है। इस बेटी ने इतना नेक काम किया सर गर्व से ऊंचा हो गया। पिता प्रवीन ने कहा की हम भी मजदूरी करते हैं मजदूरों को मिलने वाली इस नेक सेवा से सभी खुश नजर आए। सृष्टि गुलाटी की इस छोटी सी सेवा से सभी को एक प्रेरणा भी मिली।

सुप्रीम कोर्ट ने सीपीडब्ल्यूडी महानिदेशक को 14 मई को पेश होने के आदेश दिए

(परिवहन विभाग द्वारा भी तो इन्ही कुछ वर्षो में सैकड़ों हरे भरे पेड़ों को काटा है और उसके बदले जो पेड़ लगाए उनकी निगरानी और देखभाल भी नही की, फिर उन से (परिवहन आयुक्त) भी सुप्रीम कोर्ट द्वारा जवाब क्यों नहीं? टोलवा)

मैदान गढ़ी के पास छतरपुर रोड और सार्क विश्वविद्यालय के बीच सड़क के निर्माण के लिए 1000 से अधिक पेड़ों की कटाई के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष, सीपीडब्ल्यूडी महानिदेशक सहित अन्य को भी 14 मई को कोर्ट में पेश होने का आदेश दिया है. साथ ही कोर्ट ने यथास्थिति बनाये रखने का आदेश दिया है. जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस संदीप मेहता की पीठ ने कहा कि अगर हम संतुष्ट हुए तो दोबारा पेड़ लगाने के लिए कहेंगे. मामले की सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता मुकुल रोहतगी ने कहा कि रिज प्रबंधन बोर्ड की संवैधानिकता की जांच करने का समय आ गया है. वह पेड़ों को काटने की इजाजत दे रही है. उसे रिज डिस्ट्रक्शन बोर्ड कहा जाता है. कोर्ट ने पिछली सुनवाई में कहा था कि अदालत के मना करने के बावजूद डीडीए ने सड़क निर्माण के लिए पेड़ों की कटाई जारी रखी. यह कोर्ट के आदेश की अवहेलना है. कोर्ट ने कहा था कि प्रथम दृष्टया हमने पाया कि सड़क निर्माण के लिए पेड़ों को काटने की डीडीए की कार्रवाई कोर्ट के आदेश का अवमानना है. कोर्ट ने 8 फरवरी और 4 मार्च 2024 को इससे जुड़ा आदेश पारित किया था. गौरतलब है कि 3 मई को दिल्ली हाइकोर्ट ने दिल्ली में वायु गुणवत्ता की खराब हालत को लेकर दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने दिल्ली के वन सचिव से दिल्ली मेट्रो, राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण और पीडब्ल्यूडी को वन क्षेत्र से अतिक्रमण हटाने के लिए पेड़ों को काटने की अनुमति देने संबंधी विस्तृत जानकारी देने को कहा था।

स्वयंसेवकशाला : सशक्त समुदाय: लोरिया प्रगतिशील फाउंडेशन की प्रेरक यात्रा

सात साल पहले, लोरिया प्रगतिशील फाउंडेशन गहरे नुकसान और प्यार की जगह से उभरा। लोरिया की याद में स्थापित, एक युवा आत्मा जिसने 12 साल की उम्र में रक्त कैंसर से बहादुरी से लड़ाई लड़ी, हमारा संगठन दूसरों, विशेषकर बच्चों की मदद करने की उसकी भावना और समर्पण के प्रमाण के रूप में खड़ा है।

लोरिया की यात्रा, हालांकि दुखद रूप से छोटी थी, हाशिये पर पड़े और वंचितों की सेवा करने की गहरी प्रतिबद्धता से चिह्नित थी। जरूरतमंद लोगों की सहायता करने के उनके जुनून ने हमारे फाउंडेशन की स्थापना को प्रेरित किया, और हमें हमारे समाज के सबसे कमजोर सदस्यों के लिए आशा की किरण बनने के मिशन पर प्रेरित किया।

फ़रीदाबाद के मध्य में, हमारा फाउंडेशन उन लोगों के जीवन को ऊपर उठाने के लिए अथक प्रयास करता है जिन्हें अक्सर नज़रअंदाज कर दिया जाता है - मजदूर, घरेलू नौकरानियाँ, सफाईकर्मी और अनगिनत अन्य जो हमारे समुदाय की रीढ़ हैं। अटूट समर्पण और प्रभावशाली पहल के माध्यम से, हम सभी के लिए सम्मान, शिक्षा और अवसर का मार्ग प्रदान करने का प्रयास करते हैं।

हमारे प्रयासों में हमारे लाभार्थियों की विविध आवश्यकताओं को संबोधित करने के उद्देश्य से कार्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। शैक्षिक सशक्तिकरण और प्रतिभाओं को बढ़ावा देने से लेकर आवश्यक स्वास्थ्य देखभाल सहायता और सम्मानजनक अंतिम संस्कार प्रदान करने तक, प्रत्येक पहल उन लोगों के लिए अत्यंत देखभाल और विचार के साथ तैयार की जाती है जिनकी हम सेवा करते हैं।

लोरिया प्रगतिशील फाउंडेशन (पंजी.)

लोरिया अदलखा
हमारी प्रेरणा

शैक्षिक सशक्तिकरण हमारे मिशन के मूल में है। समर्पित ट्यूशन, सीखने के संसाधनों तक पहुंच और विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के माध्यम से, हम अपनी देखरेख में प्रत्येक बच्चे की पूरी क्षमता को उजागर करना चाहते हैं। दिमागों को पोषित करके और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देकर, हम आने वाली पीढ़ियों के लिए उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

फिर भी, हमारा काम कक्षा से कहीं आगे तक फैला हुआ है। हम स्कूल जाने वाले बच्चों की मदद करने वाली विधवाओं के साथ एकजुटता से खड़े हैं, उनके बोझ को कम करने के लिए मासिक राशन प्रदान करते हैं। हम सुरक्षित पेयजल और आवश्यक स्वास्थ्य देखभाल सहायता तक पहुंच सुनिश्चित करते हैं, यह मानते हुए कि बुनियादी आवश्यकताएं मौलिक अधिकार हैं, विशेषाधिकार नहीं।

हमारे लोकाचार के केंद्र में निःशुल्क सहायता का सिद्धांत है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि वित्तीय बाधाओं के कारण किसी को भी आवश्यक सेवाओं से वंचित नहीं रहना चाहिए। यह समावेशिता और समानता के प्रति प्रतिबद्धता है जो हमें आगे बढ़ाती है, हमें और अधिक करने और सामाजिक न्याय की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

जैसे ही हम अपनी अब तक की यात्रा पर विचार करते हैं, हम अपने समुदाय के अटूट समर्थन के लिए कृतज्ञता से भर जाते हैं। अपना समय, संसाधन और विशेषज्ञता देने वाले सभी लोगों को हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं। आपकी उदारता हमारे मिशन को बढ़ावा देती है और हमें उन लोगों के जीवन में सार्थक बदलाव लाने के लिए प्रेरित करती है जिनकी हम सेवा करते हैं।

पूछताछ के लिए या यह जानने के लिए कि आप हमारे उद्देश्य का समर्थन कैसे कर सकते हैं, कृपया कृष्ण अदलखा (अध्यक्ष) से 9811742701 या प्राण शर्मा (उपाध्यक्ष) से 9910396398 पर संपर्क करें। आपकी भागीदारी बहुत बड़ा बदलाव ला सकती है।

ग्लोबल कन्फेडरेशन ऑफ एनजीओ के सह संस्थापक और प्रबंधन ट्रस्टी डॉ. अंकुर शरण की एक पहल, जो वालंटियरशाला अभियान के माध्यम से स्वयंसेवकों को सशक्त बनाने के लिए विभिन्न प्लेटफार्मों और पहलों के माध्यम से वास्तविक चेंजमेकर्स की कहानी साझा कर रहे हैं, यदि आप हमारे पारिस्थितिकी तंत्र भागीदारों की किसी भी पहल को पसंद करते हैं - तो उनसे जुड़ें , उन्हें स्वयंसेवक बनने में मदद करें और हम जितना संभव हो उतना समर्थन करें।

indiangreenbuddy@gmail.com

क्या है हल्दीघाटी युद्ध का दूसरा भाग 'बैटल ऑफ दिवेर

हम में से बहुतों को महाराणा प्रताप और हल्दीघाटी युद्ध की जानकारी है लेकिन उस युद्ध के बाद अगले 10 सालों में मेवाड़ में महाराणा ने कैसे स्वतंत्रता की लड़ाई जारी रखी, इसकी जानकारी कम ही लोगों को है। वास्तविकता में हल्दीघाटी का युद्ध, महाराणा प्रताप और मुगलों के बीच हुए कई युद्धों की शुरुआत भर था।

देखा जाए तो मुगल न तो महाराणा प्रताप को पकड़ सके और न ही मेवाड़ पर पूर्ण आधिपत्य जमा सके। यूं तो हल्दीघाटी के युद्ध के बाद मुगलों का कुम्भलगढ़, गोगुंदा, उदयपुर और आसपास के ठिकानों पर अधिकार हो गया था। लेकिन इतिहास में दर्ज है कि 1576 में हुए हल्दीघाटी युद्ध के बाद भी अकबर ने महाराणा को पकड़ने या मारने के लिए 1577 से 1582 के बीच करीब एक लाख सैन्यबल भेजे।

अंगेजी इतिहासकारों ने लिखा है कि हल्दीघाटी युद्ध का दूसरा भाग जिसको उन्होंने 'बैटल ऑफ दिवेर' कहा है, मुगल बादशाह के लिए एक करारी हार सिद्ध हुआ था। कर्नल टॉड ने भी अपनी किताब में जहां हल्दीघाटी को 'थर्मोपल्ली ऑफ मेवाड़' की संज्ञा दी, वहीं दिवेर के युद्ध को 'मेवाड़ का मैराथन' बताया है (मैराथन का युद्ध 490 ई.पू. मैराथन नामक स्थान पर यूनान केमिल्टियाड्स एवं फारस के डेरियस के मध्य हुआ, जिसमें यूनान की विजय हुई थी, इस युद्ध में यूनान ने अद्वितीय वीरता दिखाई थी), कर्नल टॉड ने महाराणा

और उनकी सेना के शौर्य, युद्ध कुशलता को स्पार्टा के योद्धाओं सा वीर बताते हुए लिखा है कि वे युद्धभूमि में अपने से 4 गुना बड़ी सेना से भी नहीं डरते थे।

दिवेर युद्ध की योजना महाराणा प्रताप ने अरावली स्थित मनकियावस के जंगलों में बनाई थी। भामाशाह द्वारा मिली राशि से उन्होंने एक बड़ी फौज तैयार कर ली थी। बीहड़ जंगल, भटकावभरे पहाड़ी रास्ते, भीलों, राजपूत, स्थानीय निवासियों की गुरिल्ला सैनिक टुकड़ियों के लगातार हमले और रसद, हथियार की लूट से मुगल सेना की हालत खराब कर रखी थी। हल्दीघाटी के बाद अक्टूबर 1582 में दिवेर का युद्ध हुआ। इस युद्ध में मुगल सेना की अगुवाई करने वाला अकबर का चाचा सुल्तान खां था।

विजयादशमी का दिन था और महाराणा ने अपनी नई संगठित सेना को दो हिस्सों में विभाजित करके युद्ध का बिगुल फूंक दिया। एक टुकड़ी की कमान स्वयं महाराणा के हाथ में थी, तो दूसरी टुकड़ी का नेतृत्व उनके पुत्र अमर सिंह कर रहे थे। महाराणा प्रताप की सेना ने महाराज कुमार अमर सिंह के नेतृत्व में दिवेर के शाही थाने पर हमला किया। यह युद्ध इतना भीषण था कि प्रताप के पुत्र अमर सिंह ने मुगल सेनापति पर भाले का ऐसा वार किया कि भाला उसके शरीर और घोड़े को चीरता हुआ जमीन में जा धंसा और सेनापति मूर्ति की तरह एक जगह गड़ गया।

उधर महाराणा प्रताप ने बहलोल खान के सिर पर इतनी ताकत से वार किया कि उसे घोड़े समेत 2 टुकड़ों में काट दिया। स्थानीय इतिहासकार बताते हैं कि इस युद्ध के बाद यह कहावत बनी कि रमेवाड़ के योद्धा सवार को एक ही वार में घोड़े समेत काट दिया करते हैंर। अपने सिपाहसालारों की यह गत देखकर मुगल सेना में बुरी तरह भगदड़ मची और राजपूत सेना ने अजमेर तक मुगलों को खदेड़ा। भीषण युद्ध के बाद बचे-खुचे 36000 मुग़ल सैनिकों ने महाराणा के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। दिवेर के युद्ध ने मुगलों के मनोबल को बुरी तरह तोड़ दिया। दिवेर के युद्ध के बाद प्रताप ने गोगुंदा, कुम्भलगढ़, बस्सी, चावंड, जावर, मदारिया, मोही, माण्डलगढ़ जैसे महत्वपूर्ण ठिकानों पर कब्ज़ा कर लिया

स्थानीय इतिहासकार बताते हैं कि इसके बाद भी महाराणा और उनकी सेना ने अपना अभियान जारी रखते हुए सिर्फ चित्तौड़ को छोड़ के मेवाड़ के अधिकतर ठिकाने/ दुर्ग वापस स्वतंत्र करा लिए। यहां तक कि मेवाड़ से गुजरने वाले मुगल काफिलों को महाराणा को रकम देनी पड़ती थी।

स्वास्थ्य पर संगीत के स्वरों का चमत्कारी प्रभाव

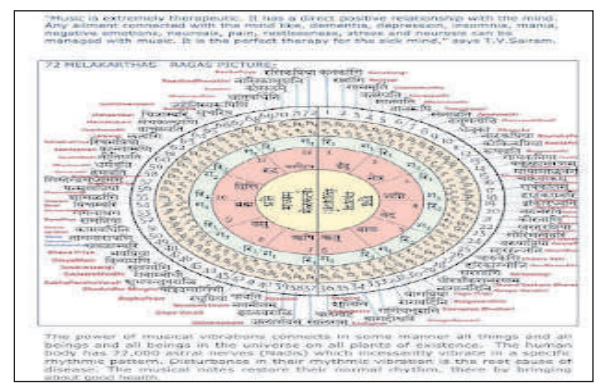

गान्धर्ववेद (संगीतशास्त्र) में स्वर सात बतलाये गये हैं। इन्हीं सात स्वरोंके मिश्रणसे सभी राग-रागिनियों का स्वरूप निर्धारित हुआ है। स्वर साधना एवं नादानुसंधान के है विविध प्रयोग निर्दिष्ट हैं। इनसे शरीर, स्वास्थ्यको भी बल मिलता है। जानिए कैसे। इन सात स्वरों के नाम हैं-सा, रे, ग, म, प, ध, नि।

सा - (षड्ज) - नासिका, कण्ठ, उर, तालु, जिह्वा और दाँत इन छः स्थानों के सहयोग से उत्पन्न होने के कारण इसे षड्ज कहते हैं। अन्य छः स्वरों की उत्पत्तिका आधार होने के कारण भी इसे षड्ज कहा जाता है। इसका स्वभाव ठंडा, रंग गुलाबी और स्थान नाभि- प्रदेश है। इसका देवता अग्नि है। यह स्वर पित्तज रोगोंका शमन करता है। उदाहरण- मोर का स्वर षड्ज होता है।

रे - (ऋषभ) - नाभि से उठता हुआ वायु जब कण्ठ और शीर्ष से टकराकर ध्वनि करता है तो उस स्वर को रे (ऋषभ) कहते हैं। इसकी प्रकृति शीतल तथा शुष्क, रंग हरा एवं पीला मिला हुआ और स्थान हृदय-प्रदेश है। इसका देवता ब्रहा है। यह स्वर कफ एवं पित्तप्रधान रोगोंका शमन करता है। उदाहरण- पपीहा का स्वर ऋषभ होता है।

ग (गन्धार)- नाभि से उठता हुआ वायु जब कण्ठ और शीर्षसे टकराकर नासिका की गन्ध से युक्त होकर निकलता है, तब उसे गन्धार कहते हैं। इसका स्वभाव ठंडा, रंग नारंगी और स्थान फेफड़ों में है। इसका देवता सरस्वती है। यह पित्तज रोगों का शमन करता है। उदाहरण- बकरे का स्वर गन्धार होता है।

म (मध्यम)- नाभि से उठा हुआ वायु जब उर-प्रदेश और हृदय से टकराकर मध्य भाग में नाद करता है, तब उसे मध्यम स्वर कहते हैं। इसका स्वभाव - शुष्क, रंग गुलाबी और पीला मिश्रित तथा स्थान कण्ठ है। इसकी प्रकृति चंचल है। इस स्वरके देवता महादेव हैं। यह वात और कफ रोगोंका शमन करता है।

प (पंचम) - नाभि, उर, हृदय, कण्ठ और शीर्ष- इन पाँच स्थानों का स्पर्श करने के कारण इस स्वर को पंचम कहते हैं। सात स्वरों की श्रृंखला में पाँचवे स्थान पर - होने से भी यह पंचम कहा जाता है। इसकी प्रकृति उत्साहपूर्ण, रंग लाल और स्थान मुख है। इसका देवता लक्ष्मी कहा गया है। यह कफ प्रधान रोगोंका शमन करता है। उदाहरण-कोयल का स्वर। उदाहरण-कौआ मध्यम स्वर में बोलता है।

ध (धैवत)- पूर्व के पाँच स्वरों का अनुसंधान करने वाले इस स्वर की प्रकृति चित्त को प्रसन्न और उदासीन - दोनों बनाती है। इसका स्थान तालु है और देवता गणेश हैं। यह पित्तज रोगों का शमन करता है। उदाहरण- मेढक का स्वर।

नि (निषाद)- यह स्वर अपनी तीव्रता से सभी स्वरों को दबा देता है, अतः निषाद कहा गया है। इसका स्वभाव ठंडा-शुष्क, रंग काला और स्थान नासिका है। इसकी प्रकृति जोशीली और आह्लादकारी है। इसके देवता सूर्य हैं। यह वातज रोगों का शमन करता है।

मातृ दिवस विशेष : माँ तो माँ होती है - प्रियंका श्रीवास्तव

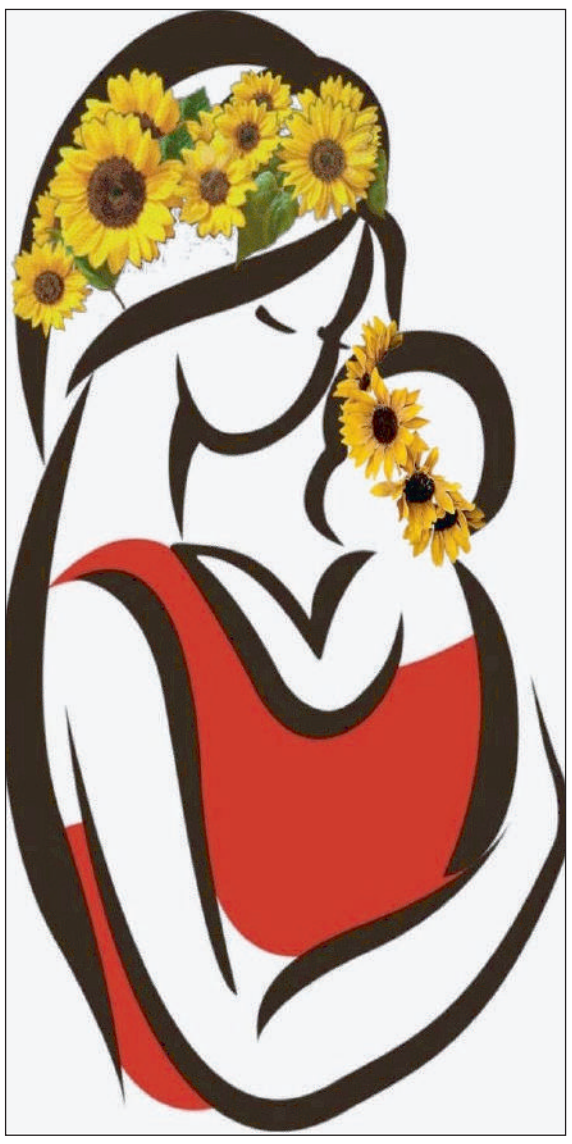

हर एक के जीवन में माँ एक अनमोल इंसान के रुप में होती है जिसके बारे शब्दों से बयाँ नहीं किया जा सकता है ऐसा कहा जाता है कि भगवान हर किसी के साथ नहीं रह सकता इसलिए उसने माँ को बनाया हालाँकि माँ के साथ कुछ महत्वपूर्ण क्षणों को वर्णित किया जा सकता है। एक माँ हमारे जीवन की हर छोटी बड़ी जरुरतो का ध्यान रखने वाली और खूबसूरत इंसान होती है। वो बिना किसी अपने व्यक्तिगत लाभ के हमारी हर जरुरत के लिये हर पल ध्यान रखती है

मां से हमारा अस्तित्व है। मां ही जीवन है, मां ख़ुशी है, मां धरती पर भगवान का रूप है। कहते हैं, यदि कोई मां अपने बच्चे को दिल से आशीर्वाद दे दे तो उस व्यक्ति की सफ़लता निश्चित है। जब हम मां के गर्भ में होते हैं, उसी समय से हमारे जीवन में मां की भूमिका शुरू हो जाती है।

एक माँ अपने बच्चे के चेहरे पर पहली मुस्कान देखती है और अपनी शिक्षा और आशीर्वाद से उसे स्थायी बना देती है। मातृत्व की कला बच्चों को जीने की कला सिखाना है। घर बच्चे के समग्र विकास के लिए पहला बिल्डिंग ब्लॉक है और माँ वास्तव में सबसे अद्भुत शिक्षक है।

मां हमारी सबसे पहली शिक्षक होती हैं, बचपन से ही उनकी दी हुई सीख हमारी जिंदगी को सुगम बनाती चली जाती है लेकिन वक्त बीतने के साथ ऐसा क्यों होने लगता है कि मां के पास बैठने, उनके साथ बात करने और उनके अनुभवों से कुछ सीखने का समय ही नहीं मिलता।

संस्कारशाला : पिता का आशीर्वाद!

कर्नाटक मै बेंगलुरु के एक व्यापारी की यह सत्य घटना है। जब मृत्यु का समय सन्निकट आया तो पिता ने अपने एकमात्र पुत्र धनपाल को बुलाकर कहा कि.. बेटा मेरे पास धनसंपत्ति नहीं है कि मैं तुम्हें विरासत में दूं। पर मैंने जीवनभर सच्चाई और प्रामाणिकता से काम किया है। तो मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं कि, तुम जीवन में बहुत सुखी रहोगे और धूल को भी हाथ लगाओगे तो वह सोना बन जायेगी।

बेटे ने सिर झुकाकर पिताजी के पैर छुए। पिता ने सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और संतोष से अपने प्राण त्याग कर दिए।

अब घर का खर्च बेटे धनपाल को संभालना था। उसने एक छोटी सी ठेला गाड़ी पर अपना व्यापार शुरू किया।

धीरे धीरे व्यापार बढ़ने लगा। एक छोटी सी दुकान ले ली। व्यापार और बढ़ा।

अब नगर के संपन्न लोगों में उसकी गिनती होने लगी। उसको विश्वास था कि यह सब मेरे पिता के आशीर्वाद का ही फल है।

क्योंकि, उन्होंने जीवन में दुःख उठाया, पर कभी धैर्य नहीं छोड़ा, श्रद्धा नहीं छोड़ी, प्रामाणिकता नहीं छोड़ी इसलिए उनकी वाणी में बल था।

और उनके आशीर्वाद फलीभूत हुए। और मैं सुखी हुआ। उसके मुंह से बारबार यह बात निकलती थी।

एक दिन एक मित्र ने पूछाः तुम्हारे पिता में इतना बल था, तो वह स्वयं संपन्न क्यों नहीं हुए? सुखी क्यों नहीं हुए?

धर्मपाल ने कहाः मैं पिता की ताकत की बात नहीं कर रहा हूं। मैं उनके आशीर्वाद की ताकत की बात कर रहा हूं।

इस प्रकार वह बारबार अपने पिता के आशीर्वाद की बात करता, तो लोगों ने उसका नाम ही रख दिया बाप का आशीर्वाद!

धर्मपाल को इससे बुरा नहीं लगता, वह कहता कि मैं अपने पिता के आशीर्वाद के काबिल निकलूं, यही चाहता हूं।

ऐसा करते हुए कई साल बीत गए। वह विदेशों में व्यापार करने लगा। जहां भी व्यापार करता, उससे बहुत लाभ होता।

एक बार उसके मन में आया, कि मुझे लाभ ही लाभ होता है!! तो मैं एक बार नुकसान का अनुभव करूं।

तो उसने अपने एक मित्र से पूछा, कि ऐसा व्यापार बताओ कि जिसमें मुझे नुकसान हो।

मित्र को लगा कि इसको अपनी सफलता का और पैसों का घमंड आ गया है। इसका घमंड दूर करने के लिए इसको ऐसा धंधा बताऊं कि इसको नुकसान ही नुकसान हो। तो उसने उसको बताया कि तुम भारत में लौंग खरीदो और जहाज में भरकर अफ्रीका के जंजीबार में जाकर बेचो। धर्मपाल को यह बात ठीक लगी।

जंजीबार तो लौंग का देश है। वहां से लौंग भारत में लाते हैं और यहां 10-12 गुना भाव पर बेचते हैं।

भारत में खरीद करके जंजीबार में बेचें, तो साफ नुकसान सामने दिख रहा है। परंतु धर्मपाल ने तय किया कि मैं भारत में लौंग खरीद कर, जंजीबार खुद लेकर जाऊंगा। देखूं कि पिता के आशीर्वाद कितना साथ देते हैं।

नुकसान का अनुभव लेने के लिए उसने भारत में लौंग खरीदे और जहाज में भरकर खुद उनके साथ जंजीबार द्वीप पहुंचा।

जंजीबार में सुल्तान का राज्य था। धर्मपाल जहाज से उतरकर के और लंबे रेतीले रास्ते पर जा रहा था ! वहां के व्यापारियों से मिलने को।

उसे सामने से सुल्तान जैसा व्यक्ति पैदल सिपाहियों के साथ आता हुआ दिखाई दिया।

उसने किसी से पूछा कि, यह कौन है? उन्होंने कहाः यह सुल्तान हैं।

सुल्तान ने उसको सामने देखकर उसका परिचय पूछा। उसने कहाः मैं भारत के गुजरात के खंभात का व्यापारी हूं। और यहां पर व्यापार करने आया हूं।

सुल्तान ने उसको व्यापारी समझ कर उसका आदर किया और उससे बात करने ल

धर्मपाल ने देखा कि सुल्तान के साथ सैकड़ों सिपाही हैं। परंतु उनके हाथ में तलवार, बंदूक आदि कुछ भी न होकर बड़ी-बड़ी छलनियां है।

उसको आश्चर्य हुआ। उसने विनम्रता पूर्वक सुल्तान से पूछाः आपके सैनिक इतनी छलनी लेकर के क्यों जा रहे हैं।

सुल्तान ने हंसकर कहाः बात यह है, कि आज सवेरे मैं समुद्र तट पर घूमने आया था। तब मेरी उंगली में से एक अंगूठी यहां कहीं निकल कर गिर गई।

अब रेत में अंगूठी कहां गिरी, पता नहीं। तो इसलिए मैं इन सैनिकों को साथ लेकर आया हूं। यह रेत छानकर मेरी अंगूठी उसमें से तलाश करेंगे।

धर्मपाल ने कहाः अंगूठी बहुत महंगी होगी।

सुल्तान ने कहाः नहीं! उससे बहुत अधिक कीमत वाली अनगिनत अंगूठी मेरे पास हैं। पर वह अंगूठी एक फकीर का आशीर्वाद है।

मैं मानता हूं कि मेरी सल्तनत इतनी मजबूत और सुखी उस फकीर के आशीर्वाद से है। इसलिए मेरे मन में उस अंगूठी का मूल्य

सल्तनत से भी ज्यादा है।

इतना कह कर के सुल्तान ने फिर पूछाः बोलो सेठ, इस बार आप क्या माल ले कर आये हो।

धर्मपाल ने कहा किः लौंग!

सुल्तान के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। यह तो लौंग का ही देश है सेठ। यहां लौंग बेचने आये हो? किसने आपको ऐसी सलाह दी।

जरूर वह कोई आपका दुश्मन होगा। यहां तो एक पैसे में मुट्ठी भर लोंग मिलते हैं। यहां लोंग को कौन खरीदेगा? और तुम क्या कमाओगे?

धर्मपाल ने कहाः मुझे यही देखना है, कि यहां भी मुनाफा होता है या नहीं।

मेरे पिता के आशीर्वाद से आज तक मैंने जो धंधा किया, उसमें मुनाफा ही मुनाफा हुआ। तो अब मैं देखना चाहता हूं कि उनके आशीर्वाद यहां भी फलते हैं या नहीं।

सुल्तान ने पूछाः पिता के आशीर्वाद? इसका क्या मतलब?

धर्मपाल ने कहाः मेरे पिता सारे जीवन ईमानदारी और प्रामाणिकता से काम करते रहे। परंतु धन नहीं कमा सकें। उन्होंने मरते समय मुझे भगवान का नाम लेकर मेरे सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिए थे, कि तेरे हाथ में धूल भी सोना बन जाएगी।

ऐसा बोलते-बोलते धर्मपाल नीचे झुका और जमीन की रेत से एक मुट्ठी भरी और सम्राट सुल्तान के सामने मुट्ठी खोलकर उंगलियों के बीच में से रेत नीचे गिराई तो..

धर्मपाल और सुल्तान दोनों का आश्चर्य का पार नहीं रहा। उसके हाथ में एक हीरेजड़ित अंगूठी थी। यह वही सुल्तान की गुमी हुई अंगूठी थी।

अंगूठी देखकर सुल्तान बहुत प्रसन्न हो गया। बोलाः वाह खुदा आप की करामात का पार नहीं। आप पिता के आशीर्वाद को सच्चा करते हो।

धर्मपाल ने कहाः फकीर के आशीर्वाद को भी वही परमात्मा सच्चा करता है।

सुल्तान और खुश हुआ। धर्मपाल को गले लगाया और कहाः मांग सेठ। आज तू जो मांगेगा मैं दूंगा।

धर्मपाल ने कहाः आप 100 वर्ष तक जीवित रहो और प्रजा का अच्छी तरह से पालन करो। प्रजा सुखी रहे। इसके अलावा मुझे कुछ नहीं चाहिए।

सुल्तान और अधिक प्रसन्न हो गया। उसने कहाः सेठ तुम्हारा सारा माल में आज खरीदता हूं और तुम्हारी मुंह मांगी कीमत दूंगा।

इस कहानी से शिक्षा मिलती है, कि पिता के आशीर्वाद हों, तो दुनिया की कोई ताकत कहीं भी तुम्हें पराजित नहीं होने देगी।

पिता और माता की सेवा का फल निश्चित रूप से मिलता है। आशीर्वाद जैसी और कोई संपत्ति नहीं।

बालक के मन को जानने वाली मां और भविष्य को संवारने वाले पिता यही दुनिया के दो महान ज्योतिषी है।

अपने बुजुर्गों का सम्मान करें! यही भगवान की सबसे बड़ी सेवा है।

बंसीवाला : श्री कृष्ण की प्रिय, बाँसुरी -वरुण स्वरूप

प्रकृति का संगीत से सबसे दृढ़ सम्बन्ध यदि दिखता है तो वह वंशी अथवा बाँसुरी के रूप में दिखता है। सबसे सरल, सबसे सीधा वाद्य, न कुछ जुड़ना न कुछ लगाना। बांस के वंश में उतपन्न, स्वयं श्री कृष्ण की प्रिय, बाँसुरी।

बाँसुरी, एक प्राचीन और आत्मिक संगीत वाद्य यंत्र है जो अपनी मधुर ध्वनियों से संगीत प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर देता है। यह मुख्यतः बांस से निर्मित होता है और इसकी उत्पत्ति भारतीय संगीत परंपरा में गहराई से जुड़ी हुई है।

क्या कारण है कि बाँसुरी भगवान कृष्ण को, महादेव को इतनी प्रिय है। क्या कारण है कि आज के संगीत में भी बाँसुरी वैसे ही शौक से बजायी जाती है जैसे प्राचीन समय में। जिस वाद्य को पण्डित हरिप्रसाद चौरसिया, पण्डित राजेन्द्र प्रसन्ना उठा के विलक्षण विलक्षण रागों का सृजन करते हैं, वही बाँसुरी हमारे लोक संगीत में मानो प्राण फूक देती है। फिल्मों के वह गीत जिनमें बाँसुरी प्रमुखता से बजी है, वह मानो अमर हो गए हैं। वो चाहे द्रुपद की गमक हों या बीट बॉक्सिंग की थिरकन, सब कुछ इस वाद्य में बज जाता है। आधुनिक संगीत में बाँसुरी का उपयोग जैज़, फ्यूज़न, और यहाँ तक कि पॉप संगीत में भी होता है। इस के स्वर सच में आपके अंतर्मन को छू सकने में माहिर हैं।

योग में सबसे महत्वपूर्ण होता है साँसों का नियंत्रण, जिस के द्वारा आप अपने प्राणों का नियमन कर सकते हैं। बाँसुरी बजाते समय यह अपने आप हो जाता है। इस तरह से यह एक उत्तम व्यायाम भी है। ताल के साथ, रिदिम के साथ जब बजाते हैं तो मस्तिष्क गणित में प्रखर होने लगता है। कोविड के समय बाँसुरी वादन ने प्राण तक बचाये। जिन फेफड़ो में वाइरस के कारण ब्लॉकेज हो गया था, वह बाँसुरी बजाने से साफ हो गए।

जो बाँसुरी बजाना जानते हैं, आप उनसे पूछिये की क्या अनुभव होता है उन्हें इसे बजाते समय? क्या महसूस हो रहा होता है जब उन की आँखे बंद होती है और जब उन की साँस उस बांस से स्वर की उतपत्ति कर रही होती है। वह क्षण जब सारी प्रकृति, पवन, तृण, वृक्ष सब मानों उस सुर के समुद्र में डूब उतर रहे होते हैं। जो बाँसुरी बजाना जानते हैं, उन से इस अनुभव को अवश्य पूँछिये। वे बताते समय, यदि शब्दों में व्यक्त कर पाए तो, अवश्य आँख में आनन्द आँसू भर कर इस को बताएंगे। स्वरों में मेघों का घिरना, स्वरों में वर्षा का गिरना, स्वरों में सूर्य का उदित होना, अस्त होना और कितना कुछ।

थोड़े शब्दों में कहूँ तो बाँसुरी आपको पूरी तरह से लीन कर सकती है। स्वर सीधे अंतर तक उतर कर आपको भिगो डालता है। सारा दुख, पीड़ा, सब टेंशन आदि दूर हो जाती हैं। मस्तिष्क तरोताज़ा हो उठता है और आप की रचनात्मक शक्ति सुदृढ होने लगती है।

"बंसीवाला" ऐसे ही अनुभव से हर किसी को रूबरू करवाने की एक पहल है, एक प्रयास है। दशकों से जो गुरुओं से सीखा है, जो साधना से, रियाज़ से समझा है, उसे आप तक पहुंचाने की साध है। पाँच साल के बच्चे से नब्बे वर्ष के वृद्ध तक, सब इस वंशी को सीख सकते हैं और इस के प्रभाव का अनुभव कर सकते हैं। बंसीवाला का उद्देश्य बाँसुरी की समृद्ध विरासत से सबको जोड़ने का है। हर हाथ में फिर से बाँसुरी देखने का, हर साँस से बाँसुरी को जोड़ने का, हर जीवन से संगीत की संगति कराने का है। बंसीवाला, एक प्रयास मेरे, हमारे अनुभव को आप तक ले के आने का।

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) केजरीवाल के खिलाफ ट्रायल कोर्ट में शुक्रवार को चार्जशीट कर सकता है दायर...

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। कथित शराब घोटाले में गिरफ्तार दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। सूत्रों का कहना है कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) केजरीवाल के खिलाफ ट्रायल कोर्ट में शुक्रवार को चार्जशीट दायर कर सकता है। इस मामले की जानकारी रखने वाले एक अधिकारी ने बताया कि पहली बार केजरीवाल को आरोपी बनाया जाएगा। केजरीवाल के खिलाफ दायर होने जा रही चार्जशीट की टाइमिंग काफी अहम है। ईडी ऐसे समय पर दिल्ली के मुख्यमंत्री को आरोपी बनाने जा रही है जब शुक्रवार को ही सुप्रीम कोर्ट में उनकी अंतरिम जमानत पर फैसला होने जा रहा है। देश की सबसे बड़ी अदालत गिरफ्तारी को दी गई चुनौती पर भी सुनवाई करेगी। इससे पहले दिल्ली हाई कोर्ट ने केजरीवाल की गिरफ्तारी को सही करार दिया था। 21 मार्च को गिरफ्तार किए गए केजरीवाल को अभी तक आरोपी नहीं बनाया गया है। सूत्रों का कहना है कि ईडी ताजा चार्जशीट में केजरीवाल समेत कुछ अन्य लोगों को आरोपी बना सकती है। यह भी बताया गया है कि केजरीवाल को मुख्य साजिशकर्ता के रूप में पेश किया जाएगा। इससे पहले भी कोर्ट में मौखिक रूप से ईडी के वकील केजरीवाल को मुख्य साजिशकर्ता और सरगना बता चुके हैं। इस मामले की जानकारी रखने वाले विशेषज्ञों का कहना है कि यदि अरविंद केजरीवाल को आरोपी बनाया जाता है तो जल्द ही आम आदमी पार्टी को भी अभियुक्त बनाया जा सकता है, जिसके वह प्रमुख हैं। यह पहली बार होगा जब किसी राजनीतिक दल को मनी लॉन्ड्रिंग केस में आरोपी बनाया जाएगा। यदि ऐसा होता है तो यह आम आदमी पार्टी के लिए अब तक का सबसे बड़ा झटका होगा। कथित शराब घोटाले से जुड़े केस में अरविंद केजरीवाल के अलावा दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया भी जेल में बंद हैं। आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह को भी चार महीने तक जेल में रहना पड़ा। **क्या चार्जशीट का अंतरिम जमानत पर भी असर होगा?**

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को हुई सुनवाई के दौरान कहा था कि केजरीवाल दिल्ली के मुख्यमंत्री हैं, आदतन अपराधी नहीं। लोकसभा चुनाव पांच साल में आता है और इसलिए प्रचार के लिए उन्हें अंतरिम जमानत देने पर विचार किया जा सकता है। हालांकि, ईडी ने इसका पुरजोर विरोध किया था। सुप्रीम कोर्ट 10 मई को इस मामले की सुनवाई के बाद फैसला सुना सकता है। **माना जा रहा है कि सर्वोच्च अदालत में सुनवाई से पहले ईडी ट्रायल कोर्ट में चार्जशीट पेश कर सकती है। केंद्रीय जांच एजेंसी सुप्रीम कोर्ट में इस तथ्य को रखकर अपना पक्ष मजबूत कर सकती है कि केजरीवाल के खिलाफ चार्जशीट दायर की जा चुकी है।**

'लिव-इन पार्टनर से बच्चे के मौलिक अधिकार का दावा नहीं कर सकता दोषी', दिल्ली हाईकोर्ट ने राहत देने से किया इनकार

दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा कि लिव-इन पार्टनर की बात छोड़ दें किसी की कानूनी रूप से विवाहित पत्नी के साथ भी दाम्पत्य संबंध बनाए रखने के आधार पर पैरोल देने की अनुमति नहीं देता है। अदालत ने उक्त टिप्पणी करते हुए कैदी की जमानत याचिका खारिज कर दी। याचिकाकर्ता कैदी ने पहले यह जानकारी नहीं दी थी कि महिला उसकी लिव-इन पार्टनर है।

नई दिल्ली। आजीवन कारावास की सजा काट रहे कैदी को राहत देने से इनकार करते हुए दिल्ली हाईकोर्ट ने टिप्पणी की कि कानून और जेल नियमों के दायरे में एक दोषी व्यक्ति अपने लिव-इन पार्टनर से बच्चे के लिए मौलिक अधिकार का दावा नहीं कर सकता है, जबकि उसका जीवनसाथी जीवित है और उसके पहले से ही बच्चे हैं। न्यायमूर्ति स्वर्ण कांता शर्मा की पीठ ने कहा कि जेल नियम किसी कैदी को वैवाहिक संबंध बनाए रखने के आधार पर पैरोल की अनुमति नहीं देते हैं।

पैरोल देने की अनुमति नहीं: अदालत ने कहा कि लिव-इन पार्टनर की बात छोड़ दें किसी की कानूनी रूप से विवाहित पत्नी के साथ भी दाम्पत्य संबंध बनाए रखने के आधार पर पैरोल देने की अनुमति नहीं देता है। अदालत ने उक्त टिप्पणी करते हुए कैदी की जमानत याचिका खारिज कर दी।

याचिकाकर्ता कैदी ने पहले यह जानकारी नहीं दी थी कि महिला उसकी लिव-इन पार्टनर है। याचिका में महिला को उसकी पत्नी बताया गया था। याची ने यह भी नहीं बताया था कि वह अपनी पहली पत्नी से कानूनी तौर पर अलग नहीं हुआ है और उसके तीन बच्चे हैं।

परिवार के सदस्य में लिव-इन पार्टनर शामिल नहीं: दिल्ली जेल नियमों के अनुसार एक कैदी को अपने पारिवारिक जीवन में निरंतरता बनाए रखने और पारिवारिक और सामाजिक मामलों से निपटने में सक्षम बनाने के लिए पैरोल या छुट्टी दी जा सकती है। अदालत ने कहा कि जेल नियम पैरोल के लिए आवेदन पर विचार करने के लिए परिवार के सदस्य की बीमारी को आधार मानते हैं, लेकिन ऐसे परिवार के सदस्य में याचिकाकर्ता का लिव-इन पार्टनर शामिल नहीं होगा।

जमानत देने से इनकार करने के निर्णय को के. कविता ने हाई कोर्ट में दी चुनौती

बीआरएस नेता के. कविता ने दिल्ली हाईकोर्ट में निचली अदालत के फैसले को चुनौती दी है। अदालत ने कहा था कि कविता के गवाहों को धमकाने के संबंध में उनके आचरण और इस आशंका को देखते हुए कि वह एक प्रभावशाली महिला होने के नाते मामले के अन्य गवाहों को प्रभावित करने की कोशिश कर सकती हैं वो इस स्तर पर जमानत पर रिहाई की हकदार नहीं हैं।

नई दिल्ली। आबकारी घोटाला से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग और सीबीआई के भ्रष्टाचार मामले में जमानत देने से इनकार करने के लिए निचली अदालत के निर्णय को बीआरएस नेता के. कविता ने दिल्ली हाईकोर्ट में चुनौती दी है। कविता की याचिका पर शुक्रवार को दिल्ली हाई कोर्ट में सुनवाई होगी।

राउज एवेन्यू कोर्ट की विशेष न्यायाधीश कावेरी बावेजा ने हाल ही में कविता के आवेदन को यह कहते हुए खारिज कर दिया था कि राहत देने के लिए यह सही समय नहीं है। अदालत ने कहा था कि प्रथमदृष्टया आरोपित के खिलाफ रिकार्ड पर पर्याप्त सामग्री है। ऐसे में मौजूद सामग्री और आरोपित के खिलाफ आरोपों की गंभीरता को देखते हुए अदालत इस स्तर पर याचिकाकर्ता के जमानत आवेदन को स्वीकार करने की इच्छुक नहीं है।

अदालत ने कहा था कि कविता के गवाहों को धमकाने के संबंध में उनके आचरण और इस आशंका को देखते हुए कि वह एक प्रभावशाली महिला होने के नाते मामले के अन्य गवाहों को प्रभावित करने की कोशिश कर सकती हैं, वो इस स्तर पर जमानत पर रिहाई की हकदार नहीं हैं।

चुनाव खर्च का बढता बोझ, ढोती जनता, फिर भी काम नहीं बनता

परिवहन विशेष न्यूज

एसडी सेठी। आजादी के 75 साल बाद लोकतंत्र के महापर्व के नाम पर जहां 1952 के पहले चुनाव में सिर्फ 10.5 करोड रूपये खर्च किए गए थे, वहीं 2024 के लोकतंत्र के महापर्व के नाम पर अनुमानतः1.20 हजार करोड रूपये खर्च होने जा रहे है। लोकतंत्र के पर्व के नाम पर चुनावी खर्च की माने तो नेपाल और भूटान के सालाना खर्च के बराबर रूपयों को भारत के चुनावों में झोंका जा रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक यूएस के प्रेसीडेंट के चुनाव से भी ज्यादा खर्च का बोझ देश ढो रहा है। जायज बात है कि इतनी भारी भरकम राशि के बोझ को आम जनता के ऊपर टैक्स की भरमार, महंगाई की मार को झेलना ही आदतों में शुमार हो गया है। इसके बाद भी सडक, पानी, बिजली, शिक्षा, रोजगार, भुखमरी, यातायात परिवहन जैसी मूलभूत समस्याओ से ही निजात नहीं मिल पा रही है। तो रोजी -रोटी, बिमारी, शादी ब्याह जैसे सामाजिक कार्यो के लिए भी मुंह ताकना पड रहा है। दूध मुंहे नन्हें-मुन्नों के मुंह से दूध तक मयैस्सर नहीं बल्कि छिनर जा रहा है। दूसरी तरफ चुनी हुई सरकारों का प्रशासनिक व्यवस्था पर कोई नकेल नहीं है। वह छुट्टी घूम रहे हैं। इन्हीं की मिलीभगत से वोट दाताओं को नकली खाध सामग्री, नकली समान, नकली दवाई, लूट बाजारी और असुरक्षित माहौल में लुटने को मजबूर किया जा रहा है। हालत ये है कि जनता की गाढी कमाई को गैरजिम्मेदार नेताओ ने काली कमाई का साधन बना लिया है। माफियाओ, अपराधियों के हाथों में राजनीति का खुला खेल खेला जा रहा है। आये दिन छापेमारी के दौरान करोडों रूपये के बंडल ऐजेंसियों द्वारा उन कथित नेताओ के घरों से बरामद किये जा रहे है। इस देश में कथित नेताओ की ऐसी जमात इक्ट्ठा होती जा रही है जो लोकतंत्र के प्रहरियों (आम-जनता) के मताधिकारों की सौदेबाजी में लगे हुए है। अपने नफा-नुकसान के मद्देनज़र सत्ताधारियों की खेमेबाजी में जा घुसने की एक नई परंपरा ने लोकतंत्र के नये अध्याय को गढा जा रहा हैं। सत्ता के भूखे नेता चंद टुकडों की खातिर अपना इमान बेच रहे हैं। वह सुबह और रात के बीच अपनी पार्टियां बदल रहे हैं। लोकतंत्र और राजनीति को सेवा के नाम पर धंधे में तब्दील होता जा रहा है। और ऐसे कथित नेताओ के लिए चुनावों में जनता की खून पसीने की कमाई को लुटाया जा रहा है। आंकडों पर नजर डाले तो देश की आजादी के बाद हुए साल 1952 के पहले आम चुनाव का कुल खर्च 10.5 करोड रूपये आया था। वर्ष 1957 के दूसरे चुनाव का कुल खर्च 5.9 करोड रूपये था। 1962 का कुल खर्च 7.3 करोड रूपये था।वहीं 1998 का 666.22 करोड रूपये तो वहीं साल 2019 का 50 हजार करोड रूपये था। लेकिन आज तो वर्ष 2024 का चुनावी खर्च करीब 1.20 हजार करोड रूपये से ज्यादा आने का अनुमान है। रिपोर्ट के मुताबिक इतना खर्च तो मालदीव, नेपाल और भूटान का सालाना बजट है। वहीं यूएस प्रेसीडेंट के चुनाव में भी इतना भारी भरकम खर्च नहीं होता है, जितना भारत के लोकतंत्र के पर्व के नाम पर चुनावों में हजारों करोडों रूपयों को फूंका जा रहा है। अगर राजनीतिक दलों के चुनावी खर्च की बात करें तो साल 1998 में भाजपा ने करीब 1800 करोड रूपये, कांग्रेस पार्टी ने 2700 करोड रूपये और अन्य द्वारा करीब 4500 करोड रूपये खर्च किये गए। वहीं साल 2019 में भाजपा ने 27500 करोड रूपये, कांग्रेस ने 9625 करोड रूपये, और अन्य ने 17875 करोड रूपये खर्च कर डाले। इस हिसाब से साल 2024 में राजनीतिक दलों समेत अन्य के खर्चों में कई गुना खर्च का अनुमान है।चुनाव प्रचार, रैलियों, और सडक यात्रा समेत हेलीकाप्टरों, जहाजों में घूमा जा रहा है। लोकतंत्र के पर्व के नाम पर आजादी के बाद से लेकर अब तक के खर्च का अनुमानतः खरबों रूपये का पानी की तरह बहाना किसी भी देश के विकास और उन्नति के अलग मुकाम को प्राप्त किया जा सकता है।इसके अलावा देश और राज्यों को बांटा गया सलाना बजट को जोड ले तो देश में आर्थिक, सामाजिक, विकास की लहर की बयार बहनी चाहिए थी। लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। आज भी देश में गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, महंगाई, मिलावट, अपराध, असुरक्षित जीवन झेलने को मजबूर होना पड रहा है। अभी भी वक्त है कि, सरकारें आम जनता की भलाई के लिए जुट जाए तो बेहतर होगा। नहीं तो दुखी, लाचार जनता देश के कर्णधारों से सीधे तौर पर सवाल दागने लगे तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। लिहाजा देश के राजनीतिज्ञ, प्रशासनिक, व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन होना अब अनिवार्य हो गया है।

दिल्ली मेट्रो में नाबालिग लड़के के साथ छेड़छाड़ करने वाला शख्स गिरफ्तार, सोशल मीडिया पर सुर्खियों में था मामला

परिवहन विशेष न्यूज

बीते तीन मई को एक नाबालिग लड़के ने इंटरनेट मीडिया पर मेट्रो में अकेले सफर के दौरान अपने साथ घटी घटना की आपबीती सुनाई थी। लड़के ने इंटरनेट मीडिया पर संदेश के माध्यम से बताया था कि जब वह मेट्रो से अपने घर जा रहा था और जब वह राजीव चौक मेट्रो स्टेशन पर पहुंचा तो चढ़ते समय एक व्यक्ति उसके कूल्हे को अपनी उंगली से छूने लगा।

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो पुलिस के स्पेशल स्टाफ की टीम ने मेट्रो में सफर के दौरान नाबालिग युवक के साथ छेड़छाड़ करने वाले आरोपित को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपित की पहचान अंबेडकर कॉलोनी, ग्राम खेड़ा खुर्द, उत्तर पश्चिमी दिल्ली निवासी जितेंद्र गौत के रूप में हुई है। मामले में आईपीसी की धारा 355 और 8 पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। आरोपित स्नातक है और एक संस्था में दैनिक मजदूरी पर कार्यरत था।

तीन मई को एक नाबालिग लड़के ने इंटरनेट मीडिया पर मेट्रो में अकेले सफर के दौरान अपने साथ घटी घटना की आपबीती सुनाई थी। लड़के ने इंटरनेट मीडिया पर संदेश के माध्यम से बताया था कि जब वह मेट्रो से अपने घर जा रहा था और जब वह राजीव चौक मेट्रो स्टेशन पर पहुंचा, तो चढ़ते समय एक व्यक्ति उसके कूल्हे को अपनी उंगली से छूने लगा।

आरोपी ने नाबालिग के साथ लगातार छेड़छाड़ की

शिकायतकर्ता ने सोचा कि यह गलती होगी। मगर आरोपित ने कश्मीरी गेट मेट्रो स्टेशन पहुंचने तक लगातार नाबालिग से छेड़छाड़ की। इसके बाद राजीव चौक मेट्रो स्टेशन थाने में मामला दर्ज किया गया और जांच शुरू की गई।

दिल्ली मेट्रो पुलिस डीसीपी जी रामगोपाल नायक ने बताया कि मामले की संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए स्पेशल स्टाफ मेट्रो प्रभारी समीर श्रीवास्तव राजीव चौक मेट्रो स्टेशन थाना तेजदत्त गौड़ के नेतृत्व में जांच टीम का गठन किया गया।

जांच के दौरान नाबालिग के साथ छेड़छाड़ की वारदात को अंजाम देने वाले आरोपित की पहचान के लिए राजीव चौक से जहांगीर पुरी मेट्रो स्टेशन तक 15 मेट्रो स्टेशनों के सीसीटीवी कैमरो की फुटेज खंगाली गई। फुटेज से पता चला कि आरोपित जहांगीर पुरी मेट्रो स्टेशन से कौशांबी मेट्रो स्टेशन तक लगातार यात्रा करता है। इससे पुलिस को यह अदाजा हो गया कि किसी एक स्थान पर आरोपित रहता है।

कौशांबी मेट्रो स्टेशन के पास के सीसीटीवी फुटेज स्कैन

आरोपित की पहचान स्थापित करने और आरोपित के ठिकाने की जांच के लिए टीम जहांगीर पुरी और कौशांबी मेट्रो स्टेशन पर पहुंची। कौशांबी मेट्रो स्टेशन के आसपास के सीसीटीवी फुटेज को स्कैन किया गया और यहां मेट्रो से उतरने पर आरोपित को सर्विस रोड का उपयोग करते हुए पाया गया।

कई दुकानदारों, गार्डों और स्थानीय लोगों को आरोपित की तस्वीर दिखाकर आरोपित के बारे में पूछताछ की गई। आखिरकार गुप्त सूचना के बाद, आरोपित जितेंद्र गौतम को स्पेशल स्टाफ मेट्रो पुलिस टीम ने पकड़ लिया और राजीव चौक मेट्रो स्टेशन थाना पुलिस के हवाले कर दिया।

शुक्रवार से सेक्टर-31 से सेक्टर-18 तक बंद रहेगी एलिवेटेड रोड, ऐसी रहेगी यातायात व्यवस्था...

नोएडा की एलिवेटेड रोड 10 मई से सेक्टर-31 से सेक्टर-18 तक यातायात के लिए बंद रहेगी। एलिवेटेड रोड पर सेक्टर-31-25 से सेक्टर-18 तक री सरफेसिंग का काम होगा। जिसके मार्ग पर वाहनों का प्रतिबंध रहेगा। वहीं दूसरी ओर सेक्टर-60 से सेक्टर-33 इस्कान मंदिर लूप तक एलिवेटेड मार्ग पर दिन के समय यातायात का सुचारू संचालन होगा। अभी मरम्मत कार्य के कारण जाम की समस्या रहती है।

नोएडा। एलिवेटेड रोड पर नोएडा प्राधिकरण की ओर से मरम्मत कार्य किया जा रहा है। 10 मई कल यानी शुक्रवार रात से चौथे चरण का काम शुरू होगा। एलिवेटेड रोड पर सेक्टर-31-25 से सेक्टर-18 तक री सरफेसिंग का काम होगा। जिसके मार्ग पर वाहनों का प्रतिबंध रहेगा।

एआरटीओ कार्यालय के पास रहती है ट्रैफिक जाम की समस्या

वहीं दूसरी ओर सेक्टर-60 से सेक्टर-33 इस्कान मंदिर लूप तक एलिवेटेड मार्ग पर दिन के समय यातायात का सुचारू संचालन होगा। अभी मरम्मत कार्य के कारण सेक्टर-61 शाप्रिक्स मॉल, सेक्टर-33 एआरटीओ कार्यालय के पास ट्रैफिक जाम की समस्या रहती है। व्यस्त समय में स्कूल, कॉलेज, फैक्ट्री जाने वाले चालकों को परेशानी होती है।

ऐसे में सरफेसिंग कार्य प्रचलित होने के कारण सेक्टर-31-25 एलिवेटेड मार्ग से सेक्टर-18 होते हुए डीएनडी/चिल्ला/दिल्ली/नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेस-वे/परीचौक की ओर जाने वाले यातायात का डायवर्जन किया गया है।

डीसीपी ट्रैफिक अनिल यादव का कहना है कि यातायात डायवर्जन के दौरान इमरजेंसी वाहनों को सकुशल पास कराया जाएगा। असुविधा से बचने हेतु वैकल्पिक मार्गों का प्रयोग करे। यातायात असुविधा उत्पन्न होने पर यातायात हेल्प लाइन नंबर 9971009001 पर संपर्क कर सकते हैं।

ऐसा रहेगा यातायात

सेक्टर-33 इस्कान मंदिर से सेक्टर-31.25 चौक होकर सेक्टर-18, नोएडा ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेस-वे की ओर जाने वाला यातायात सेक्टर-35 मोरना होकर एमपी 3 मार्ग से अपने गंतव्य को जा सकेगा।

सेक्टर-33 इस्कान मंदिर से सेक्टर-31.25 चौक होकर सेक्टर-18, चिल्ला/डीएनडी की ओर जाने वाला यातायात सेक्टर-31-25 चौक से पूर्व यूटर्न कर एडोब चौक से स्टेडियम चौक होकर एमपी-1 मार्ग से अपने गंतव्य को जा सकेगा।

सेक्टर-67/ थाना फेस-3 की ओर से एलिवेटेड मार्ग का प्रयोग कर सेक्टर-18 की ओर जाने वाले वाहन सेक्टर 60 अंडरपास के ऊपर से लेफ्ट टर्न कर, एमपी 3 मार्ग होशियारपुर, सिटी सेंटर, सेक्टर 37/बोटेनिकल गार्डन से अपने गंतव्य की ओर जा सकेगे।

सेक्टर-62/माडल टाउन, एनएच-24 की ओर से एलिवेटेड मार्ग का प्रयोग कर सेक्टर-18 की ओर जाने वाले वाहन सेक्टर-60 अंडरपास से होकर, सेक्टर-71/52 होते हुए एमपी-3 मार्ग होशियारपुर, सिटी सेंटर, सेक्टर 37/बोटनिकल गार्डन का प्रयोग कर अपने गंतव्य की ओर जा सकेंगे।

सेक्टर-71 की ओर से एलिवेटेड मार्ग का प्रयोग कर सेक्टर-18 की ओर जाने वाले वाहन सेक्टर-52 मेट्रो होते हुए एमपी-3 मार्ग होशियारपुर, सिटी सेंटर, सेक्टर-37/बोटेनिकल गार्डन) का प्रयोग कर अपने गंतव्य की ओर जा सकेगे।

किसान चौक, पर्थला की ओर से एलिवेटेड मार्ग का प्रयोग कर सेक्टर-18 की ओर जाने वाले वाहन सेक्टर-71 अंडरपास होकर एमपी 3 मार्ग होशियारपुर, सिटी सेंटर, सेक्टर-37/बोटेनिकल गार्डन का प्रयोग कर अपने गंतव्य की ओर जा सकेंगे।

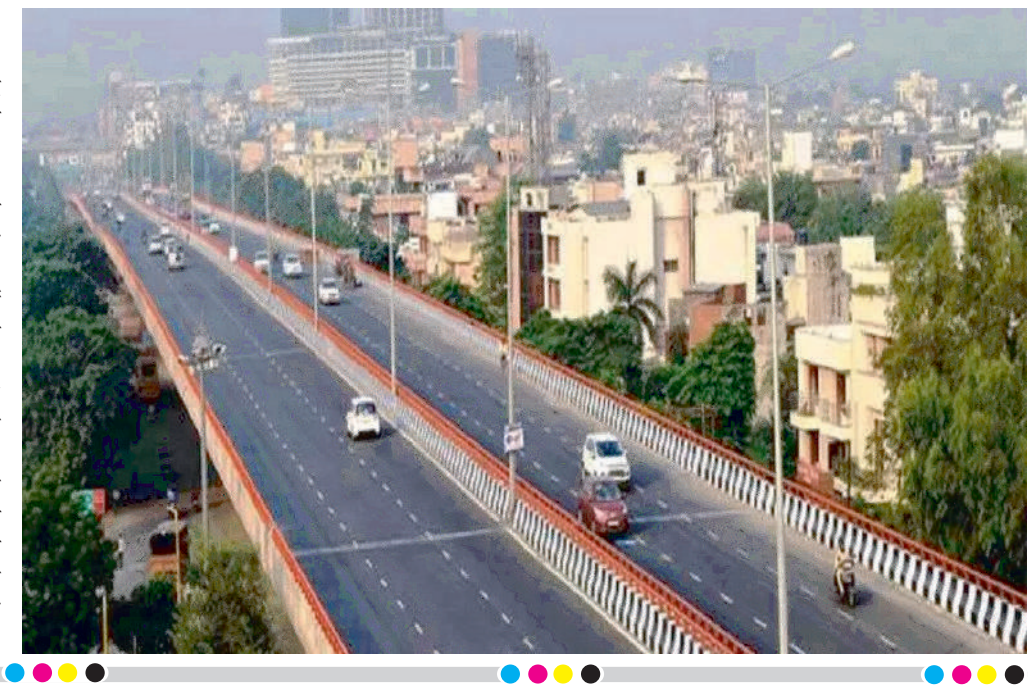

कार के नीचे बच्चा फंस गया है...', नोएडा में ठक-ठक गिरोह ने महिला को बीच सड़क पर रोका; फिर कर दिया ये कांड

ठक-ठक गिरोह के बदमाशों ने पर्थला फ्लाईओवर के पास कार के नीचे बच्चा आने की सूचना देकर महिला को बीच सड़क पर रोक लिया। इसके बाद अपने जाल में फंसाकर मोबाइल फोन लूट की वारदात को अंजाम दिया। मामले की सूचना पुलिस को दी गई। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने कहा कि जल्द ही आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा। कोतवाली सेक्टर-113 क्षेत्र में दो मई की सुबह कार से जा रहीं एक महिला के साथ लूट की वारदात हो गई। ठक-ठक गिरोह के बदमाशों ने पर्थला फ्लाईओवर के निकट कार के नीचे बच्चा आने की सूचना देकर मोबाइल फोन लूट लिया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पीड़िता वांछा गर्ग ने बताया कि वह दो मई की सुबह करीब 10 बजे ऑफिस जा रही थीं। पर्थला चौक के पास उनकी कार जाम में फंस गई थी। तभी दो व्यक्ति अचानक उनकी कार के दोनों तरफ आए और कहने लगे कि उनकी कार ने एक बच्चे को टक्कर मारकर घायल कर दिया। यह नहीं बताया कि बच्चा उनकी कार के पिछले पहिए के नीचे फंस गया है।

शीशा नीचे करते ही अंदर डाल दिया हाथ

इसी बीच कार की दूसरी ओर खड़े व्यक्ति ने खिड़की को पीटना शुरू कर दिया। उसने शीशा नीचे करने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने उसे नजरअंदाज कर दिया। लोगों की बात सुनकर वह भयभीत हो गईं और उसकी बात सुनने के लिए कार का शीशा थोड़ा नीचे किया। जैसे ही शीशा नीचे किया उसने हाथ अंदर डाल दिया।

तभी पीड़िता ने शीशा ऊपर किया तो उसका हाथ फंस गया और वह रोने लगा। यह सब उसने ध्यान भटकाने के लिए किया। कुछ ही देर में दोनों आरोपित भाग गए। कार के अंदर से फोन चोरी कर ले गए।

एडीसीपी मनीष कुमार मिश्र का कहना है कि पीड़िता की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर है। जल्द ही आरोपितों को पकड़ लिया जाएगा।

साया गोल्ड एवेन्यू में 2 साल से खराब थे 600 से ज्यादा RO के सेडिमेंट, लोगों के बीमार होने पर जागा बिल्डर

गाजियाबाद की साया गोल्ड एवेन्यू सोसायटी के फ्लैटों में लगे 600 से ज्यादा आरओ में लगे सेडिमेंट लगभग दो वर्ष से खराब थे। जिस वजह से लोगों को पानी में धूल मिट्टी और गंदगी मिल रही थी। सोसायटी के लोगों ने कहा कि बिल्डर ने उन्हें आरओ लगवाकर दिए थे। आरओ के सेडिमेंट अधिकतम एक वर्ष में जरूर बदलना चाहिए।

साहिबाबाद। साया गोल्ड एवेन्यू सोसायटी के फ्लैटों में लगे 600 से ज्यादा आरओ में लगे सेडिमेंट दो वर्ष से खराब थे। जिस वजह से लोगों को पानी में धूल, मिट्टी और गंदगी मिल रही थी। ये आरओ बिल्डर ने लगवाए थे। लोगों के बीमार होने पर बिल्डर आरओ के सेडिमेंट बदलवाए हैं, लेकिन कुछ फ्लैटों में अभी भी सेडिमेंट नहीं बदले गए हैं।

सोसायटी के लोगों ने कहा कि बिल्डर ने उन्हें आरओ लगवाकर दिए थे। आरओ के सेडिमेंट अधिकतम एक वर्ष में जरूर बदलना चाहिए। एक वर्ष बाद काम करना कम बंद कर देता है। सेडिमेंट का काम पानी से गंदगी, और धूल व मिट्टी को अगल करना होता है। जब सेडिमेंट बदले गए तो वह बहुत खराब निकले।

वहीं कुछ आरओ के खराब हो चुके कार्बन फिल्टर भी बदले गए हैं। सोसायटी की पल्लवी ने बताया कि सेडिमेंट को बहुत पहले बदलवाना चाहिए था। बिल्डर ने पानी को लेकर प्रत्येक स्तर से लापरवाही की। सोसायटी में वाटर सप्लाई फिल्टर भी खराब था। उसे भी ठीक नहीं कराया गया। वहीं अभी तक वाटर साफ्नर प्लांट भी चालू नहीं हुआ है।

बंद मिला एक सबमर्सिबल

सोसायटी के लोगों का आरोप है कि बेसमेंट की पानी की टंकी को भरने में भी लापरवाही की जा रही थी। बेसमेंट में दो सबमर्सिबल हैं। एक सबमर्सिबल खराब मिला। एक सबमर्सिबल से टंकी भरने में काफी समय लग जाता था। जिस वजह से टंकी खाली करके सफाई करने में लापरवाही की जाती थी। सबमर्सिबल को ठीक कराने काम शुरू कर दिया गया है।

फाल्ट का पुख्ता जानकारी नहीं

पेयजल टंकी में सीवर का पानी मिला कहां से अभी तक इस प्रश्न का जवाब किसी के पास नहीं है। ऐसे में बिल्डर और जीडीए के अधिकारी हवा में तीर चला रहे हैं। बेसमेंट में पानी की टंकी और ओवर हैड टैंकों की सफाई कर खानापूरी कर दी गई है। मेंटेनेंस के स्टाफ को फाल्ट की पुख्ता जानकारी नहीं होने पर है लोगों में संशय की स्थिति हैं। सोसायटी के निमिश ने बताया कि जब तक फाल्ट का पता नहीं चलती तक लोग इसका पानी नहीं पियेंगे।

राम भक्तों पर गोलियां चलवाने वालों को सीएम योगी ने चुनावी जनसभाओं में सपा और कांग्रेस पर किया करारा प्रहार...

यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को लखीमपुर खीरी और सीतापुर में चुनावी जनसभा की। योगी ने कहा कि जो रामभक्तों पर गोलियां चलवाते हैं जो राम मंदिर को बेकार बताते हैं उनको सत्ता में आने का अधिकार नहीं है। यूपी को कानून-व्यवस्था देने के साथ हर गरीब को मूलभूत सुविधाएं देने वाली भाजपा इस बार भी 400 पार करने जा रही है।

लखनऊ। यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को लखीमपुर खीरी और सीतापुर में चुनावी जनसभा की। योगी ने कहा कि जो रामभक्तों पर गोलियां चलवाते हैं, जो राम मंदिर को बेकार बताते हैं, उनको सत्ता में आने का अधिकार नहीं है।

यूपी को कानून-व्यवस्था देने के साथ हर गरीब को मूलभूत सुविधाएं देने वाली भाजपा इस बार भी 400 पार करने जा रही है। अब तक हुए तीन चरणों के मतदान में स्पष्ट हो चुका है कि नरेन्द्र मोदी तीसरी बार भी देश के प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं।

लखीमपुर में भाजपा प्रत्याशी रेखा वर्मा व लखीमपुर खीरी में अजय कुमार मिश्र टेनी के समर्थन में जनसभा में योगी ने कहा कि विपक्षी पार्टियों ने युवाओं के हाथ में जहां तमंचा थमाया, वहीं भाजपा ने युवाओं के हाथ में टैबलेट दिए। रामद्रोही विपक्षी नेता अयोध्या श्रीराम मंदिर को अनावश्यक बता रहे हैं, जो लोग पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के निधन पर दो शब्द नहीं बोल पाए, वह माफिया के मरने पर उनके घर फातिहा पढ़ने जाते हैं।

नैमिषारण्य का विकास अयोध्या की तरह

मुख्यमंत्री ने सीतापुर में भाजपा प्रत्याशी राजेश वर्मा के समर्थन में आयोजित जनसभा में कहा कि नैमिषारण्य का विकास अयोध्या की तरह होगा। आज अयोध्या त्रेता युग जैसी भव्य और दिव्य दिखने लगी है। वहीं, काशी जाने पर सतयुग दिखता है। राम मंदिर अयोध्या में नहीं तो क्या काबुल, कंधार व कराची में बनता। राम भक्त विकसित भारत के लिए काम कर रहे तो राम द्रोही दुनिया में भारत को अपमानित कर रहे हैं।

लाठी से सिर पर वार कर किसान सचिव की हत्या, शराब पीने के दौरान हुआ विवाद

भोजपुर थाना क्षेत्र के गांव सैदपुर के सचिव (27) किसान थे। चार भाइयों में तीसरे नंबर पर थे। वे बड़े भाई के खेत पर भी काम करते थे। घर में अकेले रहते थे। बृहस्पतिवार शाम को उनका भाई सचिन घर आया। देखा तो अंदर सचिव खून से लथपथ हालत में है। वह उसे मोदीनगर के अस्पताल लेकर पहुंचे जहां से उसे गाजियाबाद रेफर किया गया।

गाजियाबाद। भोजपुर थाना क्षेत्र के गांव सैदपुर में लाठी से वार कर किसान सचिव की हत्या कर दी गई। वारदात को अंजाम शराब पीने के दौरान दिया गया। कुछ देर बाद जब किसान का भाई मौके पर पहुंचा तो वारदात का पता चला। खबर लिखे जाने तक कोई शिकायत पुलिस को नहीं मिली है। पुलिस की चार टीमें घटना के पर्दाफाश में जुटी हैं।

भोजपुर थाना क्षेत्र के गांव सैदपुर के सचिव (27) किसान थे। चार भाइयों में तीसरे नंबर पर थे। वे बड़े भाई के खेत पर भी काम करते थे। घर में अकेले रहते थे। बृहस्पतिवार शाम को उनका भाई सचिन घर आया। देखा तो अंदर सचिव खून से लथपथ हालत में है। वह उसे मोदीनगर के अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां से उसे गाजियाबाद रेफर किया गया। वहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। अस्पताल से सूचना पुलिस को मिली तो अधिकारी आनन फानन में मृतक के घर पहुंचे। वहां शराब की बोतले पड़ी थी। पास में ही एक डंडा था। जो खून से सना था।

शराब पीने को लेकर हुआ विवाद

पुलिस ने आसपास के लोगों से पता किया तो जानकारी हुई कि कुछ लोग दोपहर में यहां आए थे। पुलिस का मानना है कि शराब पीने के दौरान किसी बात को लेकर विवाद हुआ, जिसमें सचिव की हत्या की गई। स्वजन ने बताया कि सचिव की शादी नहीं हुई थी। एसीपी मोदीनगर ज्ञान प्रकाश राय ने बताया कि शव पोस्टमार्टम को भेज दिया गया है। तमाम बिंदु पर पुलिस छानबीन में जुटी है। मृतक के मोबाइल की सीडीआर मंगाई गई है। जल्द वारदात का पर्दाफाश किया जाएगा।

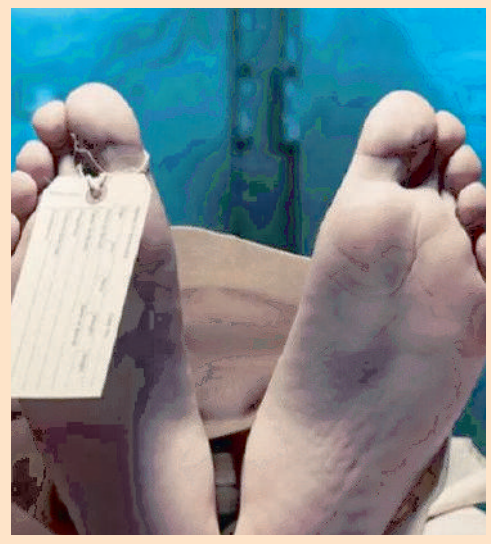

माहिरा होम्स के प्रबंध निदेशक को 14 दिन के लिए जेल भेजा, ईडी ने 30 अप्रैल को हरिद्वार से किया था गिरफ्तार

माहिरा होम्स के प्रबंध निदेशक सिकंदर सिंह छौक्कर को जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत ने 14 दिन की न्यायिक हिरासत में बृहस्पतिवार को जेल भेज दिया। ईडी ने पूछताछ के लिए उन्हें अदालत से आठ दिन के रिमांड पर ले रखा था। माहिरा होम्स के प्रबंध निदेशक को ईडी ने 30 अप्रैल को हरिद्वार से गिरफ्तार किया था। पहले पांच दिन की रिमांड मिली थी।

गुरुग्राम। माहिरा होम्स के प्रबंध निदेशक सिकंदर सिंह छौक्कर को जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत ने 14 दिन की न्यायिक हिरासत में बृहस्पतिवार को जेल भेज दिया। ईडी ने पूछताछ के लिए उन्हें अदालत से आठ दिन के रिमांड पर ले रखा था। बृहस्पतिवार को रिमांड की अवधि पूरी होने के बाद उन्हें अदालत में पेश किया गया। मामले की अगली सुनवाई 23 मई को वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से होगी। गौरतलब है कि माहिरा होम्स के प्रबंध निदेशक को ईडी ने 30 अप्रैल को हरिद्वार से गिरफ्तार किया था। एक अप्रैल को उन्हें जिला एवं सत्र न्यायाधीश सुभाष महला के समक्ष पेश कर पूछताछ के लिए रिमांड पर लिया था। पहले पांच दिन की रिमांड मिली थी। **रिमांड के दौरान कई लोगों के सामने बैठाकर पूछताछ :** रिमांड पूरी होने के बाद ईडी ने अदालत में पेश कर दोबारा यह तर्क देते हुए रिमांड मांगा था कि आरोपित जांच में सहयोग नहीं कर रहा है। इस पर तीन दिन की और रिमांड अदालत ने मंजूर कर ली थी। बताया जाता है कि रिमांड के दौरान कई लोगों के सामने बैठाकर पूछताछ की गई है, लेकिन कंपनी कार्यालय से मिले एप्पल के लैपटॉप की आईडी व पासवर्ड के बारे में ईडी जानकारी हासिल नहीं कर सकी।

कांग्रेस नेता ही कांग्रेस की राम मंदिर के प्रति डरावनी सोच को कर रहे बेनकाब!

मृत्युंजय दीक्षित

सनातन के प्रति कांग्रेस व इंडी गठबंधन के खतरनाक इरादों का खुलासा भी कांग्रेस के ही नेता व प्रवक्ता कर रहे हैं। पूर्व कांग्रेस नेता कल्कि पीठाधीश्वरर आचार्य प्रमोद कृष्णम ने कहा कि कांग्रेस कभी भगवान राम को मानने वाली नहीं हो सकती।

तीसरे चरण का मतदान संपन्न होने के राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और उनके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अयोध्या में श्री रामजन्मभूमि पर निर्मित दिव्य नव्य रामलला मंदिर में पूजा अर्चना की। दोनों ने प्रभु श्रीराम को साष्टांग दंडवत करते हुए उनका आशीर्वाद लिया। जहाँ राष्ट्रपति महोदया ने अपनी अनुभूतियाँ सोशल मीडिया पर साझा कीं वहीं प्रधानमंत्री रामलला के दर्शन के उपरांत जनता का आशीर्वाद लेने के लिए रोड शो पर निकल पड़े। स्वाभाविक रूप से विगत दशक में राम मंदिर आन्दोलन के राजनैतिक खेवनहार रहे नरेंद्र मोदी का रोड शो देखने के लिए जन सैलाब उमड़ पड़ा। राम मंदिर पर उमड़ने वाला यह जन समुद्र कांग्रेस, सपा, बसपा और इंडी गठबंधन में शामिल अन्य दलों को रास नहीं आता है, यही कारण है कि वे प्रभु श्रीराम व उनके भव्य मंदिर से लेकर सनातन तक पर लगातार हमले करते रहते हैं।

सनातन के प्रति कांग्रेस व इंडी गठबंधन के खतरनाक इरादों का खुलासा भी कांग्रेस के ही नेता व प्रवक्ता कर रहे हैं। पूर्व कांग्रेस नेता कल्कि पीठाधीश्वरर आचार्य प्रमोद कृष्णम ने कहा कि कांग्रेस कभी भगवान राम को मानने वाली नहीं हो सकती। उसने तो भगवान राम के अस्तित्व को ही नकार दिया था। श्रीराम मंदिर का फैसला आने के बाद एक गोपनीय बैठक में अमेरिका में रहने वाले अपने नजदीकी से कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा था कि यदि उनकी सरकार आई तो वह सुपर पावर कमीशन बनाकर शाहबानो प्रकरण की तरह राम मंदिर का फैसला बदल देंगे। आचार्य प्रमोद का कहना है कि वह कांग्रेस में 32 साल रहे हैं, भगवान श्रीराम को लेकर कांग्रेस में क्या चलता है. वह जानते हैं। मंदिर का फैसला आने के बाद राहुल गांधी ने अपने नजदीकी लोगों की बैठक बुलाई थी इसमें राम मंदिर को लेकर अपनी योजना जाहिर की थी। आचार्य प्रमोद लोकसभा चुनावों को साधारण चुनाव नहीं बताते अपितु वह इसे धर्मयुद्ध बता रहे हैं।

कांग्रेस छोड़ भाजपा में शामिल हुईं छत्तीसगढ़ कांग्रेस की प्रवक्ता राधिका खेड़ा ने भी अपने साक्षात्कार में बताया कि कांग्रेस में प्रभु श्रीराम व सनतान के प्रति कितनी नफरत भरी हुई है। राधिका खेड़ा का कहना है कि अयोध्या में राम मंदिर जाने और इंटरनेट मीडिया पर मंदिर के फोटो साझा करने के बाद से ही उन्हें कांग्रेस से सिर्फ नफरत मिली। उन्होंने बताया कि पार्टी ने उन्हें चुनाव की अवधि में मंदिर जाने से रोका था लेकिन वह खुद को रामलला के दर्शन करने से नहीं रोक पाईं। उनका कहना था कि मैने सुना था कि कांग्रेस राम विरोधी, सनातन विरोधी और हिन्दू विरोधी है पर कभी माना नहीं था किंतु जब मैं अपनी मां व परिवार के साथ रामलला के दर्शन करने गई तब कांग्रेस की असलियत का पता चल गया।जब मैंने अपने घर पर राम ध्वजा लगाई तब से कांग्रेस ने मुझे तिरस्कृत करना प्रारम्भ कर दिया।

कांग्रेस के नेतृत्व में बने इंडी गठबंधन में शामिल सभी दल राम विरोधी, सनातन विरोधी हैं यह प्रतिदिन साबित हो रहा है और इसी कारण बार-बार कहा जा रहा है कि रामभक्त सनातन समाज उठो- जागो और मतदान केंद्र तक पहुंचकर अपने मतों का सही प्रयोग करके ऐसी ताकतों को ध्वस्त कर दो, जो हिंदू सनातन समाज की परम्पराओं को नष्ट करने की ताक में बैठे हैं। अभी विगत वर्ष विधानसभा चुनावों के पहले द्रमुक नेता सनातन के उन्मूलन की बात कर रहे थे। बिहार में चारा चोर लालू यादव के बेटे तेजस्वी यादव का कहना है कि जब देश का प्रधानमंत्री हिंदू राष्ट्रपति हिंदू, सभी मुख्यमंत्री, राज्यपाल व सेना के तीनों प्रमुख हिंदू तो फिर सनातन को कैसा खतरा। यह वही तेजस्वी है जिनके पिता लालू यादव ने रामरथ यात्रा को रुकवाने के लिए भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। आज राम मंदिर भी बनकर खड़ा हो गया है और आडवाणी जी को भारत रत्न का सम्मान भी मिल चुका है। ये वही कांग्रेस है जिसके तत्कालीन राष्ट्रपति दिवंगत शंकर दयाल शर्मा ने 6 दिसंबर 1992 की शाम को राष्ट्रपति भवन में आंसू बहाये थे और उन्हीं आंसुओं की धार में सनातन समाज से बदला लेने के लिए अपनी तथाकथित संवैधानिक तानाशाही का अभूतपूर्व परिचय देते हुए उत्तर प्रदेश की कल्याण सिंह सरकार सहित चार प्रान्तों की भाजपा सरकारों को को भंग कर दिया था। आज की कांग्रेस की नजर में उस समय संविधान सुरक्षित हो गया था। यह वही कांग्रेस है जो समय समय पर देश के सर्वोच्च न्यायालय में प्रभु श्री राम को काल्पनिक बता चुकी है।

तीसरे चरण के मतदान के मध्य ही उत्तर प्रदेश में समाजवादी नेता रामगोपाल यादव ने बयान दे दिया कि अयोध्या का राम मंदिर तो बेकार है, मंदिर ऐसे बनाए जाते हैं क्या? मंदिर ऐसे नहीं बनते है। दक्षिण से उत्तर तक देख लीजिए नक्शा ठीक से नहीं बना है। समाजवादी पार्टी तो सदा से ही राम मंदिर विरोधी रही है। रामभक्त कारसेवकों का नरसंहार कराने के निकृष्टतम पाप से लेकर उसके बाद जितने भी ऐतिहासिक अवसर आए हर बार समाजवादी नेताओं ने राम मंदिर के खिलाफ नफरत भरी आग उगली है। भूमि पूजन से लेकर प्राण प्रतिष्ठा तक हर समय सपा, बसपा व कांग्रेस सहित इंडी गठबंधन में शामिल सभी दलों के नेता अपने बयानो से हिंदू सनातन समाज व प्रभु राम का अपमान ही करते रहे हैं।

रामगोपाल यादव के बयान से राम मंदिर को लेकर राजनीति एक बार फिर गर्म हो गयी है और भारतीय जनता पार्टी व प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ऐसे तत्वों पर करारा प्रहार किया है। भाजपा का कहना है कि समाजवादी काल में कब्रिस्तान बनवाना अच्छा था वो उत्तर प्रदेश जो मुख्तार अंसारी, अबू सलेम, अतीक अहमद और छोटा शकील के लिए जाना जाता था वह उनके लिए अच्छा था। एक समय था जब फिल्में बनती थी यूपी में जिला गाजियाबाद, लखनऊ सेंट्रल, मिर्जापुर अर्थात पूरी अपराध केंद्रित तब ये सब अच्छा था। यहां पर भी ध्यान देने योग्य है कि एक समय था जब अवध की पहचान केवल और नवाबों की संस्कृति तक ही सीमित हो गयी थी। एक समय वह भी था जब गंगा-जमुनी तहजीब के नाम पर अवध का भव्य सनातन इतिहास और हमारी संस्कृति को दबाया जा रहा था, कुचला जा रहा था। समाजवाद व कांग्रेस की नजर में वह समय अच्छा था, जब गंगा-जमुनी तहजीब के नाम पर लव जिहाद और धर्मांतरण का गजब का खेल चरम सीमा पर चल रहा था। वहीं समाजवादी पार्टी राम मंदिर को बेकार का कह रही है जिसके स्वर्गीय नेता मुलायम सिंह यादव ने रामभक्तों का संहार किया था।

आप नेता अरविंद केजरीवल जो अब शराब घोटाले में जेल में बंद हैं और रिहाई की भीख मांग रहे हैं उनकी पार्टी के नेता मनीष सिसोदिया व संजय सिंह ने रामभक्त चंपत राय जी पर फर्जी जमीन घोटाले का आरोप लगा दिया था। अक्षत वितरण कार्यक्रम पर तंज कसते हुए इन लोगो ने कहा था कि भाजपा युवाओं को रोजगार देने की बजाय घर-घर अक्षत बांट रही है।

वास्तविकता ये है कि अब उत्तर प्रदेश में अयोध्या, मथुरा और काशी सहित सभी हिंदू तीर्थस्थलों में भक्तों की भारी भीड़ आ रही है, जिसके कारण निवेश बढ़ रहा है और रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं किंतु वह सब कुछ समाजवादियों को बेकार लग रहा है। आज भाजपा सपा से पूछ रही है कि वैज्ञानिक ढंग से इतना शानदार और भव्य सूर्य तिलक हुआ, राम मंदिर के उद्घाटन के अवसर पर ही एक लाख करोड़ से अधिक का व्यापार हो गया, अयोध्या में एयरपोर्ट बना, रेलवे स्टेशन भव्य बन गया, वहां पर मेडिकल कालेज भी विस्तृत हो रहा है तो क्या यह सब कुछ बेकार है?

आम जनमानस को अच्छी तरह से याद है कि रामपुर में का यह लोग किस प्रकार अपने चहेते आजम खां जन्मदिन मनाने जाते थे, विदेश से केक मंगाया जाता था और सैफई में कैसे बॉलीबुड नायिकाओं का नृत्य आयोजन किया जाता था। समाजवाद की नजर में वह सब कुछ समाजवाद था और अच्छा था।

एक समय था जब समाजवादी नेता राम मनोहर लोहिया ने रामकथा का प्रचार-प्रसार प्रारम्भ किया था और आज के फर्जी समाजवादी राम मंदिर व उसकी प्राण प्रतिष्ठा ही नहीं अपितु तुलसीदास रचित रामचरित मानस व वाल्मीकि कृत रामायण को भी अपमानित करते हैं। सपा के पूर्व नेता स्वामी प्रसाद मौर्य तो रामचरित मानस जैसे पवित्र गंथ के खिलाफ हल्ला ही बोल दिए और उसकी आड़ में बेतहाशा नफरत भरी बयानबाजी कर रहे थे।

सपा, बसपा कांग्रेस के नेताओं के पास भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में जाने के लिए समय नहीं है किंतु माफिया मुख्तार व अतीक के यहां जाकर फातिहा पढ़ने का समय जरूर मिल जाता है। कांग्रेस व इंडी गठबंधन के खतरनाक इरादों को ध्यान में रखते हुए ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी जनसभाओं में जनता से कह रहे हैं कि हम सदन में 400 सीट इसलिए चाह रहे हैं कि ताकि कांग्रेस कश्मीर में धारा 370 को फिर से न लागू करने और और सुपर कमीशन बना कर राम मंदिर का निर्णय बदलने का सपना न देख पाए।

विपक्ष के सनातन और प्रभु राम के प्रति नफरत से भरी राजनीति के कारण ही उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को राम मंदिर, हिंदू व सनातन धर्म को को लेकर आक्रामक होना पड़ रहा है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का कहना है कि कांग्रेस ने लगातार रामभक्तों व मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का अपमान किया है। उसका ये आचरण दिखाता है कि वह वास्तव में सनातन राष्ट्र का अपमान करती रही है। यह समय रामभक्तों के लिए अत्यंत सावधानी का समय है और उन्हें मतदान केंद्र तक पहुंचकर अपने मत का सही प्रयोग अवश्य करना चाहिए ताकि राम मंदिर पर फिर साजिश का बाबरी ताला न लग सके।

- मृत्युंजय दीक्षित

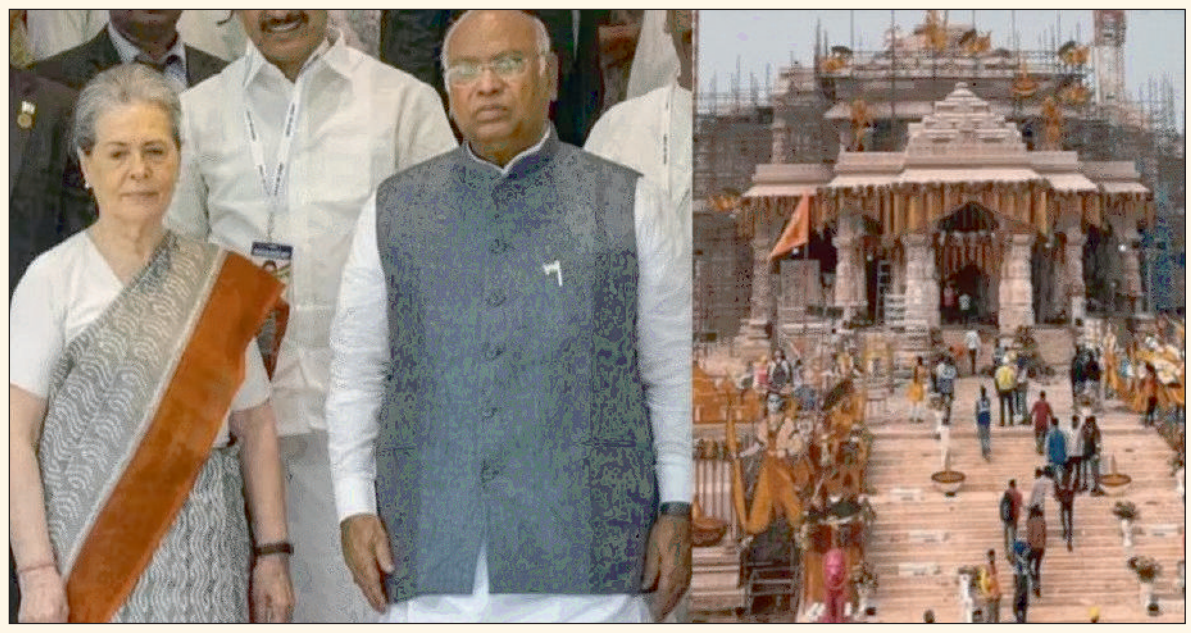

रामगोपाल यादव के बयान से राम मंदिर को लेकर राजनीति एक बार फिर गर्म हो गयी है और भारतीय जनता पार्टी व प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ऐसे तत्वों पर करारा प्रहार किया है। भाजपा का कहना है कि समाजवादी काल में कब्रिस्तान बनवाना अच्छा था वो उत्तर प्रदेश जो मुख्तार अंसारी, अबू सलेम, अतीक अहमद और छोटा शकील के लिए जाना जाता था वह उनके लिए अच्छा था। एक समय था जब फिल्में बनती थी यूपी में जिला गाजियाबाद, लखनऊ सेंट्रल, मिर्जापुर अर्थात पूरी अपराध केंद्रित तब ये सब अच्छा था। यहां पर भी ध्यान देने योग्य है कि एक समय था जब अवध की पहचान केवल और नवाबों की संस्कृति तक ही सीमित हो गयी थी। एक समय वह भी था जब गंगा-जमुनी तहजीब के नाम पर अवध का भव्य सनातन इतिहास और हमारी संस्कृति को दबाया जा रहा था, कुचला जा रहा था। समाजवाद व कांग्रेस की नजर में वह समय अच्छा था, जब गंगा-जमुनी तहजीब के नाम पर लव जिहाद और धर्मांतरण का गजब का खेल चरम सीमा पर चल रहा था।

अन्य सेगमेंट के मुकाबले एसयूवी सेगमेंट के वाहनों क यों बन रहे भारतीयों की पसंद, जानें डिटेल

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में Maruti Tata Mahindra Hyundai Toyota और किआ जैसी कई कंपनियों की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों को ऑफर किया जाता है। लेकिन पिछले कुल सालों में SUV सेगमेंट के वाहन भारतीयों की पहली पसंद बन गए हैं। अन्य सेगमेंट के मुकाबले एसयूवी सेगमेंट के वाहनों में किस तरह की खूबियों को दिया जाता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत के कार बाजार में हर महीने लाखों की संख्या में वाहनों की बिक्री होती है। जिनमें सबसे ज्यादा SUV सेगमेंट के वाहनों को खरीदा जाता है। समय के साथ इस सेगमेंट में Tata से लेकर Maruti तक सभी की ओर से कई बेहतरीन विकल्प ऑफर किए जाते हैं। हम इस खबर में आपको बता रहे हैं कि अन्य सेगमेंट के मुकाबले SUV सेगमेंट के वाहनों को क्यों भारतीय ग्राहक सबसे ज्यादा पसंद करते हैं।

मिलती है ज यादा जगह

हैचबैक, सेडान या अन्य किसी भी सेगमेंट के वाहनों के मुकाबले एसयूवी सेगमेंट के वाहनों में ज्यादा जगह मिलती है। इस तरह के वाहनों में यात्रियों के लिए पूरी जगह दी जाती है। इसके साथ ही सामान रखने के लिए इस तरह के वाहनों में काफी ज्यादा जगह को दिया जाता है। जिससे लंबी दूरी की यात्रा और ज्यादा सामान रखने में किसी भी तरह की परेशानी नहीं होती।

ज यादा ग्राउंड क्लियरेंस से मिलता है फायदा

एसयूवी सेगमेंट के वाहनों को इसलिए भी पसंद किया जाता है क्योंकि इनसे हर तरह के रास्तों पर आसानी से सफर किया जा सकता है। हैचबैक, सेडान कारों में ग्राउंड क्लियरेंस कम होती है, जबकि SUV सेगमेंट के वाहनों की ग्राउंड क्लियरेंस को ज्यादा रखा जाता है। ऐसा इसलिए किया जाता है जिससे इन वाहनों को किसी भी तरह की सड़क पर आसानी से चलाया जा सके।

मिलता है ऑफ रोडिंग का विकल प

हर तरह की सड़कों पर चलाने के अलावा भी एसयूवी सेगमेंट के वाहनों को वहां भी ले जाया जा सकता है, जहां पर अन्य सेगमेंट के वाहनों को जाने में परेशानी होती है। इनमें 4x4 जैसी सुविधा भी मिलती है, जो अन्य सेगमेंट के वाहनों में नहीं दी जाती। इसलिए इनको रेत, बर्फ, जंगल, कीचड़ जैसी स्थिति में चलाने में आसानी होती है।

मिलती है बेहतर विजिबिलिटी

एसयूवी सेगमेंट के वाहनों की ऊंचाई ज्यादा होती है। इसमें यात्रा करते हुए ज्यादा बेहतर विजिबिलिटी भी मिलती है। जिससे कार चलाने के साथ ही सफर के दौरान ड्राइवर को ज्यादा दूर तक दिखाई देता है। जबकि अन्य सेगमेंट के वाहनों में इनके मुकाबले कम विजिबिलिटी मिलती है।

मारुति स्विफ्ट 2024 के मुकाबले में टाटा, हुंडाई ऑफर करती हैं ये i20 और अल्ट्रोज जैसी कारें

देश की सबसे बड़ी वाहन निर्माता कंपनी Maruti Suzuki की ओर से Swift 2024 को भारतीय बाजार में लॉन् च कर दिया गया है। कंपनी की ओर से पेश की नई नई हैचबैक कार के मुकाबले में पहले से कई कारें हैं। मारुति से लेकर टाटा तक New Swift 2024 के मुकाबले में कौन सी कारों को भारत में ऑफर करती हैं। आइए जानते हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

देश की सबसे बड़ी वाहन निर्माता कंपनी Maruti Suzuki की ओर से Swift 2024 को भारतीय बाजार में लॉन् च कर दिया गया है। कंपनी की ओर से पेश की नई नई हैचबैक कार के मुकाबले में पहले से कई कारें हैं। मारुति से लेकर टाटा तक New Swift 2024 के मुकाबले में कौन सी कारों को भारत में ऑफर करती हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। मारुति की ओर से Swift 2024 को आधिकारिक तौर पर देश में लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की इस कार में कई बेहतरीन फीचर्स को दिया गया है। लेकिन बाजार में इसका किस कंपनी की किस गाड़ी से मुकाबला होगा। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

Maruti Baleno

मारुति की ओर से ही हैचबैक सेगमेंट में बलेनो की बिक्री की जाती है। मारुति की ही यह गाड़ी भी युवाओं को काफी पसंद आती है। इसमें भी Swift 2024 की तरह ही 1.2 लीटर का पेट्रोल इंजन दिया जाता है। पेट्रोल के अलावा इसमें सीएनजी का विकल्प भी मिलता है। मारुति बलेनो में रियर एसी वेंट्स, यूएसबी चार्जिंग पोर्ट, ड्यूल टोन इंटीरियर, एंटी पिंच विंडो, 60:40 स्प्लिट सीट्स, हेड अप डिस्प्ले, 360 डिग्री कैमरा, 22.86 सेमी स्मार्टप्ले प्रो इंफोटेनमेंट सिस्टम, एलईडी लाइट्स, क्रूज कंट्रोल, छह एयरबैग, ईएसपी, रियर पार्किंग सेंसर, हिल होल्ड असिस्ट जैसे फीचर्स को दिया जाता है। इसकी एक्स शोरूम कीमत की शुरूआत 6.66 लाख रुपये से हो जाती है।

Hyundai i20

साउथ कोरियाई कार निर्माता हुंडई भी Swift 2024 के मुकाबले में i20 को हैचबैक कार के तौर पर ऑफर करती है। हुंडई की i20 में वायरलेस चार्जर, एंबिएंट लाइट्स, सनरूफ, 26.03 सेमी इंफोटेनमेंट सिस्टम, बोस प्रीमियम साउंड सिस्टम, की-लैस एंट्री, क्रूज कंट्रोल, ड्राइव मोड्स, रियर एसी वेंट, स्टैंडर्ड तौर पर छह एयरबैग, 26 सेफ्टी फीचर्स और 60 से ज्यादा ब्लूलिंक कनेक्टिड फीचर के साथ 1.2 लीटर पेट्रोल इंजन मिलता है। इसकी एक्स शोरूम कीमत 7.04 लाख रुपये से शुरू होती है।

Tata Altroz

मारुति के अलावा टाटा मोटर्स की ओर से भी हैचबैक सेगमेंट में Altroz को बेहतरीन फीचर्स और कीमत पर ऑफर किया जाता है। Tata Motors की कार में भी 1.2 लीटर के इंजन में पेट्रोल, टर्बो पेट्रोल इंजन के साथ डीजल और सीएनजी के विकल्प भी मिलते हैं। टाटा अल्ट्रोज में 90 डिग्री ओपनिंग डोर, रियर एसी वेंट, सनरूफ, प्रोजेक्टर हेडलैंप, 17.78 सेमी इंफोटेनमेंट सिस्टम, नेविगेशन, क्रूज कंट्रोल, रेन सेंसिंग वाइपर, ऑटो हेडलैंप, ईएसपी, ड्यूल फ्रंट एयरबैग, रिवर्स पार्किंग कैमरा, हाइट एडजस्टेबल सीटबेल्ट, एबीएस, ईबीडी जैसे कई फीचर्स मिलते हैं। इसकी एक्स शोरूम कीमत की शुरूआत 6.65 लाख रुपये से हो जाती है।

छोटी कार बाजार में जान फूंकने की मारुति की कोशिश, मांग के हिसाब से रणनीति बना रही मारुति सुजुकी

मारुति सुजुकी ने भारत में अपनी लेटेस्ट हैचबैक कार स्विफ्ट लॉन्च कर दी है। नई स्विफ्ट को मार्केट में नये रंग-रूप में उतारा गया है। कंपनी अपनी लेटेस्ट हैचबैक के साथ भारतीय ऑटो मार्केट में नई जान फूंकने की कोशिश में है। इस कार को भारत में 6.49 लाख रुपए (एक्स शोरूम) की शुरुआती कीमत में लॉन्च किया गया है।

नई दिल्ली। भारत की अर्थव्यवस्था में लगातार आठ फीसद या इससे ज्यादा की विकास दर की संभावनाओं को देखते हुए यहां की सबसे बड़ी कार कंपनी मारुति सुजुकी भी उसी हिसाब से अपनी भावी रणनीति को रूप देने लगी है।

ऐसे समय जब छोटी कारों की बिक्री लगातार गिर रही है और एसयूवी की बिक्री बढ़ रही है तब मारुति सुजुकी ने अपनी प्रसिद्ध स्विफ्ट को पूरी तरह से नये रंग-रूप में उतारने का फैसला किया है। इस कदम से कंपनी ने हैचबैक बाजार में नई जान फूंकने की कोशिश की है।

इसी साल आएगी सुजुकी की ईवी

कंपनी इसी वित्त वर्ष भारत निर्मित अपनी पहली इलेक्ट्रिक कार भी लांच करने जा रही है जबकि सबसे ज्यादा बिक रहे एसयूवी सेग्मेंट में भी दो नये मॉडल इसी साल उतारने की तैयारी है। कंपनी ने जनवरी, 2024 में ही भारत में 35 हजार करोड़ रुपये के नये निवेश का ऐलान किया है।

नई स्विफ्ट की खूबियां

मारुति सुजुकी ने अपनी सबसे पॉपुलर हैचबैक कार स्विफ्ट को भारतीय बाजार में उतार दिया है। इस कार को भारत में 6.49 लाख रुपए (एक्स शोरूम) की शुरुआती कीमत में लॉन्च किया गया है। इसकी बिक्री पहले ही शुरू हो चुकी है।

मारुति सुजुकी के लेटेस्ट वर्जन के फीचर्स की बात करें तो इसके सभी वैरिएंट में 6 एयरबैग मिलेंगे। इसके साथ ही कार में हिल होल्ड कंट्रोल और तीन-पॉइंट सीटबेल्ट जैसे फीचर्स मिलेंगे।

नई स्विफ्ट के माइलेज की बात करें तो कंपनी का दावा है कि इसका मैनुअल ट्रांसमिशन 24.8kmpl और ऑटोमेटिक ट्रांसमिशन 25.7kmpl का एवरेज ऑफर करती है।

इतने करोड़ रुपये की कीमत पर बीएमडब्ल्यू ने लॉन्च की नई M4 कॉम्पटीशन M xDrive

परिवहन विशेष न्यूज

लग्जरी वाहन निर्माता BMW भारत में कई बेहतरीन कारों और एसयूवी को ऑफर करती है। कंपनी की ओर से नई कूपे M4 Competition M xDrive को लॉन् च कर दिया गया है। कंपनी की ओर से इसमें किस तरह के फीचर्स को दिया जा रहा है। इसे कितने दमदार इंजन के साथ लाया गया है। बाजार में इसका किनसे मुकाबला होगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जर्मनी की लग्जरी वाहन निर्माता BMW की ओर से भारतीय बाजार में नई गाड़ी को लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की ओर से M4 Competition M xDrive को आधिकारिक तौर पर भारत में लाया गया है। हम इस खबर में आपको BMW M4 Competition M xDrive के फीचर्स, इंजन और कीमत की जानकारी दे रहे हैं।

जर्मनी की लग्जरी कार कंपनी BMW ने देश में M4 Competition M xDrive कूपे को लॉन्च कर दिया है। कंपनी की यह गाड़ी काफी बेहतरीन फीचर्स और दमदार इंजन के साथ आई है।

कितना दमदार इंजन

BMW M4 Competition M xDrive में कंपनी ने तीन लीटर का एम ट्विन पावर टर्बो एस58 छह सिलेंडर इन-लाइन पेट्रोल इंजन को दिया है। इस इंजन से गाड़ी को 530 हॉर्स पावर और 650 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इस इंजन से कार को इतनी ताकत मिलती है जिससे इसे सिर्फ 3.5 सेकेंड में जीरो से 100 किलोमीटर की स्पीड पर चलाया जा सकता है। ड्राइविंग के लिए इसमें एफिशियंट, स्पोर्ट और स्पोर्ट प्लस मोड्स को दिया गया है। M4 Competition M xDrive में आठ स्पीड स्टेपट्रॉनिक ट्रांसमिशन को दिया गया है।

कैसे हैं फीचर्स

BMW M4 Competition M xDrive में एक्टिव सीट वेंटिलेशन, एडेप्टिव एलईडी लाइट्स, नई सीएसएल स्टाइल टेललाइट्स, एम लोगो, एम ग्राफिक्स, कार्बन फाइबर रूफ, 19 औश्र 20 इंच के अलॉय व्हील्स, एम कम्पाउंड ब्रेकिंग सिस्टम, एम कार्बन एक्सटीरियर पैकेज, कर्व्ड डिस्प्ले के साथ 8.5 ओएस, हीटेड सीट्स, हरमन कार्डन सराउंड साउंड के साथ 16 स्पीकर, 360 डिग्री कैमरा, पार्किंग असिस्टेंट प्लस, लेन कंट्रोल असिस्ट, बीएमडब्ल्यू ड्राइव रिकॉर्डर, हेड अप डिस्प्ले, फ्रंट और रियर पार्किंग सेंसर, ड्राइवर और पैसेंजर हेड एयरबैग, डीएससी, एबीएस, एएससी, एमडीएम, सीबीसी, डीबीसी, डीएससी जैसे फीचर्स को दिया जा रहा है।

कंपनी के अधिकारियों ने कही यह बात

BMW इंडिया के अध्यक्ष विक्रम पाहवा ने कहा कि एम की कोई सीमा नहीं है। नई BMW M4 Competition M xDrive वास्तव में बीएमडब्ल्यू एम के सर्वश्रेष्ठ - अजेय शक्ति, अविश्वसनीय हैंडलिंग और स्पोर्टी स्टाइल का प्रतीक है। कार बेहतर डायनैमिज्म और प्रीमियम अपील को दिखाती है, जो इसके इंडीपेंडेंट, परफॉर्मेंस ओरिएंटिड पर्सनैलिटी को दिखाती है। यह वास्तव में एक एलीट स्पोर्टिंग आइकन है। नई बीएमडब्ल्यू एम4 कॉम्पिटिशन एम एक्सड्राइव की असाधारण इंजीनियरिंग सड़क और रेसट्रैक दोनों जगहों पर अविश्वसनीय ड्राइविंग क्षमता और उत्कृष्ट शक्ति प्रदान करती है।

कितनी है कीमत

BMW M4 Competition M xDrive को भारत में 1.53 करोड़ रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है।

तेरा मंगल होये रे

स्पिरिचुअल हीलर
सिद्धगुरु प्रमोद जी

कुछ भी हमें विचलित नहीं करता, परेशान नहीं करता, चिंतित नहीं करता, दुखी नहीं करता, हम आत्मग्लानि के शिकार नहीं होते और हम समभाव में रहना सीख लेते हैं। हमारा जीवन ही पूजा बन जाता है, वंदना बन जाता है, उपासना बन जाता है, बंदगी बन जाता है और हमारा हर काम परमात्मा के प्रति समर्पण के भाव से पूरा होता है।

हमारे पिछले जन्मों के कर्मों के कारण इस जन्म के बहुत से काम या तो खुद ब खुद बनते चले जाते हैं या फिर बनते-बनते भी अचानक बिगड़ जाते हैं। यह हमारे संचित कर्मों का फल है, संचित कर्मों का परिणाम है। सहज संन्यास में हम अपने शुभ कर्मों से अपने पिछले जन्मों के पापों को धो लेते हैं और यह हमारे दुखों, चिंताओं, परेशानियों के अंत का कारण बन जाता है। सहज संन्यास परंपरा में दिखावे के कर्मकांड नहीं हैं, कठिन तंत्र-मंत्र नहीं हैं, पर साथ ही यह भी मान्यता है कि परमात्मा चाहे एक है, पर उस तक पहुंचने के रास्ते कई हैं और कोई दूसरा रास्ता भी गलत नहीं है। सहज संन्यास परंपरा किसी दूसरे रास्ते की आलोचना नहीं है, यह सिर्फ एक और रास्ता है जो जरा ज्यादा आसान है, ज्यादा मकबूल है और थोड़ा ज्यादा प्रभावी भी है'

गुरू नानक देव जी की लिखी आरती 'गगन मै थालु, रवि चंदु दीपक बने' मेरी मनपंसद आरती है और इसी तरह 'तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होये रे' मेरा मनपसंद भजन। इस भजन की खासियत यह है कि यह सबसे पहले सामने वाले के मंगल की प्रार्थना है, फिर सबके मंगल की प्रार्थना है और उसके बाद, गुरू, माता, पिता आदि के मंगल की कामना के बाद सबसे आखिर में खुद के मंगल की प्रार्थना है। इस भजन में सबके लिए निस्वार्थ भाव से प्रेममय हो जाने का भाव, सबको बिना किसी लालच के, बिना किसी भेदभाव के, बिना किसी जान-पहचान के देने का भाव, सबके लिए सेवा का भाव निहित है, जो मुझे इसलिए भी पसंद है क्योंकि सहज संन्यास मिशन हम लोग इसी ध्येय के साथ काम करते हैं। अध्यात्म की सीढियां नामक सीरीज की इस लेख माला में मैंने बार-बार यही बताने की कोशिश की है कि परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण, ब्रह्मांड की हर जड़-चेतन वस्तु और प्राणी के लिए प्रेम, सम्मान और सेवा का भाव ही असली आध्यात्मिकता है। हम ऐसा कर लें तो हमारी सोच बदल जाती है, शिकायतें खत्म हो जाती हैं, चुनौतियां परेशान नहीं करतीं, और मन में असीम कृतज्ञता का सुखदायी भाव आ जाता है। इस भजन की पहली दो पंक्तियां ही बड़ी प्रेरणादायक हैं जिनमें कहा गया है – 'तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होये रे- सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होये रे।' ऐसी शुद्ध भावना, ऐसा निस्वार्थ प्रेम जब हमारे जीवन का हिस्सा हो जाता है तो अध्यात्म के रास्ते की सारी अड़चनें खत्म हो जाती हैं, हम और ब्रह्मांड एकाकार हो जाते हैं, हम मंदिर हो जाते हैं, हम परमेश्वर हो जाते हैं। भजन में आगे अपने गुरुदेव का मंगल, फिर माता का मंगल और उसके बाद पिता का भी मंगल मांगा गया है।

और आगे चलें तो भजन में जगत के हर दुखियारे प्राणी का मंगल और जल, थल और गगन के हर प्राणी के मंगल की प्रार्थना है। तब कहीं जाकर अपने लिए कुछ कहा गया है और वो भी ये कि हे प्रभु, मेरे अंतर्मन की गांठें टूट जाएं, मेरा अंतर्मन निर्मल हो जाए, मेरे मन में राग-द्वेष न रहे, मोह मिट जाए और मैं हमेशा शील समाधि की अवस्था में रह सकूं। इसके बाद फिर से इस धरती के लिए, पूरे समाज के लिए, इस धरती के सभी प्राणियों के लिए दुआ की गई है कि यहां धर्म की पुनर्स्थापना हो और धरती के कण-कण में धर्म समाए, जन-जन में धर्म की भावना उदित हो और हर घर में शांति हो। अंत में फिर से कहा गया है – 'तेरा मंगल, मेरा मंगल, सबका मंगल होये रे।' इस भजन के माध्यम से हम खुद को समाज से, ब्रह्मांड से और परमात्मा से जोड़ लेते हैं। यह भजन हमें सिखाता है कि हम खुद को समाज से अलग या समाज से बड़ा नहीं मानते और पूरे समाज की भलाई की कामना के बाद, खुद को समाज के अंग के रूप में ही अपने लिए कुछ मांगते हैं। यह अध्यात्म की सीढ़ी की पहली, परंतु आवश्यक पायदान है। इस भावना के बिना हम अध्यात्म की सीढियों पर आगे नहीं चढ़ सकते। फिर भी यह समझना जरूरी है कि यह एक सात्विक गृहस्थ की प्रार्थना है, क्योंकि इच्छा अभी बाकी है, मांग अभी बाकी है, समर्पण है पर पूरा समर्पण नहीं हो पाया। इसीलिए यह सिर्फ पहली पायदान है। इस पायदान को पार कर लेने के बाद अगली पायदान में हम पूर्ण समर्पण की स्थिति में पहुंच जाते हैं जहां हमारी अपनी कोई इच्छा, कोई महत्वाकांक्षा बाकी नहीं रह जाती। जीवन हमें जो कुछ देता है, हम उसे अहो भाव से स्वीकार करते चलते हैं।

कुछ भी हमें विचलित नहीं करता, परेशान नहीं करता, चिंतित नहीं करता, दुखी नहीं करता, हम आत्मग्लानि के शिकार नहीं होते और हम समभाव में रहना सीख लेते हैं। हमारा जीवन ही पूजा बन जाता है, वंदना बन जाता है, उपासना बन जाता है, बंदगी बन जाता है और हमारा हर काम परमात्मा के प्रति समर्पण के भाव से पूरा होता है। जब ऐसा हो जाए तो हमें सचमुच फल की चिंता नहीं रह जाती और हम दुनियादारी की अपनी सभी जिम्मेदारियां निभाते हुए भी भगवान श्री कृष्ण की सीख के अनुसार निष्काम कर्म के साक्षी होते चलते हैं। यही कारण है कि यह भजन सहज संन्यास मिशन की भावना का प्रतिनिधि भजन बन गया है और हर सहज संन्यासी पूरी श्रद्धा से इसका गायन करता है। सहज संन्यास मिशन एक ऐसी संन्यास परंपरा है जिसमें संन्यासी न अपना परिवार छोड़ते हैं, न घर छोड़ते हैं, न दुनिया छोड़ते हैं, न ही अपनी नौकरी या व्यवसाय से किनारा करते हैं। इसी तरह न वे कपड़े रंगवाते हैं, न सिर मुंडाते हैं, न जटा बढ़ाते हैं। वे अपने जाने-पहचाने प्राकृतिक स्वरूप में ही रहते हैं, बस उनके सोचने और काम करने का तरीका बदल जाता है। संन्यास शरीर का नहीं, मन का भाव है, आत्मा का भाव है। इसलिए सहज संन्यास मिशन में किसी भी दिखावे का निर्देश नहीं है, किसी अलग पहचान का निर्देश नहीं है। निर्देश सिर्फ यही है कि परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण के भाव के साथ मन में एक, एक और केवल एक सेवा का भाव होना चाहिए।

सबका सम्मान, सबसे प्रेम, सबकी सेवा। जैसे ही मन में इस भावना का उदय होता है, मन की चिंताएं, मन के संघर्ष, आकांक्षाएं, महत्वाकांक्षाएं आदि खुद ब खुद तिरोहित हो जाते हैं। मन निर्मल हो जाता है और जीवन मुक्त हो जाता है। एक ज्ञानी बंदर के बच्चे की तरह होता है जो छुटपन में अपनी मां के पेट के साथ खुद चिपटा रहता है, लेकिन भक्ति मार्ग का साधक एक सहज संन्यासी अपने समर्पण भाव के कारण बिल्ली के बच्चे की तरह हो जाता है जिसे उसकी मां, बिल्ली खुद उठा कर इधर-उधर ले जाती है। मां उसका ध्यान रखती है, मां उसका संरक्षण करती है। भक्त सिर्फ समर्पण कर देता है, परमात्मा खुद उसे अपने सुरक्षा कवच में ले लेते हैं। हमारे पिछले जन्मों के कर्म इस जन्म में हमारा भाग्य हैं, हमारी किस्मत हैं। हमारे पिछले जन्मों के कर्मों के कारण इस जन्म के बहुत से काम या तो खुद ब खुद बनते चले जाते हैं या फिर बनते-बनते भी अचानक बिगड़ जाते हैं। यह हमारे संचित कर्मों का फल है, संचित कर्मों का परिणाम है। सहज संन्यास में हम अपने शुभ कर्मों से अपने पिछले जन्मों के पापों को धो लेते हैं और यह हमारे दुखों, चिंताओं, परेशानियों के अंत का कारण बन जाता है। सहज संन्यास परंपरा में दिखावे के कर्मकांड नहीं हैं, कठिन तंत्र-मंत्र नहीं हैं, पर साथ ही यह भी मान्यता है कि परमात्मा चाहे एक है, पर उस तक पहुंचने के रास्ते कई हैं और कोई दूसरा रास्ता भी गलत नहीं है। सहज संन्यास परंपरा किसी दूसरे रास्ते की आलोचना नहीं है, यह सिर्फ एक और रास्ता है जो जरा ज्यादा आसान है, ज्यादा मकबूल है और थोड़ा ज्यादा प्रभावी भी है।

गिन्नीज विश्व रिकार्ड विजेता लेखक

संपादक की कलम से

सीयू डिग्री में धर्मशाला फेल

परिसर की परिकल्पना में शिक्षा के प्राणों का फैसला कर रहा धर्मशाला केंद्रीय विश्वविद्यालय, अंततः डिग्रियां बांटने तक आ पहुंचा। सातवें दीक्षांत समारोह में 709 डिग्रियों का वृतांत और राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का आशीर्वाद पाकर कई प्रफुल्लित छात्र मिल जाएंगे, लेकिन इस धूप के सन्नाटे में कहीं जदरांगल का मतव्य उदास है। 'सीयू तेरी कश्ती कहां-पतवार कहां, तू सियासी मजमे में ख्वार हो गई।' पंद्रह साल का विश्वविद्यालय कई चुनावों की चाकरी करता हुआ भी राजनीतिक हिस्सों में अपनी किस्मत पर रो रहा है। तालीम अगर कहीं तकसीम हो सकती है, तो वह यहीं है, यहीं है और केंद्रीय विश्वविद्यालय की सियासत की हर कसौटी में है। मौजूदा चुनाव के धरातल पर देखें, तो केंद्रीय विश्वविद्यालय का जदरांगल परिसर कहीं खून के आंसू पीता हुआ दिखाई देगा। इसकी छाती पर मूंग दलते हुए कई नेता चुपचाप निकल गए और अंततः इसके बरअक्स देहरा परिसर बता रहा है कि असली माजरा वही है, वही है। ऐसे में धर्मशाला उपचुनाव की मुख्य सुर्खी जदरांगल परिसर को जितना जिंदा रखेगी, उतने ही लाभ की स्थिति में अब भाजपा के हो गए सुधीर शर्मा होंगे। काश! विश्वविद्यालयों के अस्तित्व का सवाल कांगड़ा के शिक्षा इतिहास को अपमानित न करता। आश्चर्य यह कि जिस कांग्रेस ने कभी धूमल सरकार की पैरवी से धर्मशाला के परिसर को छीनकर यहां बसाया था, आज उसी की सरकार सवा साल से इस मुद्दे पर ईमानदार नजर नहीं आती। मसला वन विभाग को तीस करोड़ के हर्जाने का था, लेकिन सरकार ने ढाई सौ करोड़ के परिसर की जुबां बंद कर दी। देहरा में पौंग बांध के प्रवासी पक्षियों और बगल में वनखंडी के प्रस्तावित वन्य प्राणी विहार के साथ इमारतें बुलंद हो रही हैं, लेकिन अत्यंत परीक्षाओं के दौर से गुजर कर भी जदरांगल में केंद्रीय विश्वविद्यालय के अवशेष ढूंढे जा रहे हैं। बिना कारण शिक्षा की मौत की पताका इस स्थान की हकीकत धर्मशाला चुनाव को बता रही है। यही वजह है कि विश्वविद्यालय के मुद्दे को हराने के लिए कांग्रेस बड़े जोर से उम्मीदवार खोज रही है। ऐसा कौनसा राजनीतिक सूरमा कांग्रेस के शिविर से सामने आएगा, जो केंद्रीय विश्वविद्यालय के मुद्दे को परास्त कर देगा।

न कोई कांग्रेसी नेता बोला और न ही इस विषय पर समूची पार्टी बोल पाई, जबकि स्थानीय जनता ने कई बार आंदोलन और अनशन किए। समाजसेवी अतुल भारद्वाज व उनकी टीम ने तब भी संघर्ष किया था जब धूमल सरकार ने पहली बार इससे धर्मशाला को बेदखल किया था और अब भी जब सुक्खू सरकार ने इसके निर्माण को लेकर संदेहास्पद भूमिका निभाई। आश्चर्य यह कि केंद्रीय विश्वविद्यालय राजनीति का जखीरा बनकर यह भूल गया कि उसका वास्तविक लक्ष्य है क्या। विश्वविद्यालय का जदरांगल परिसर अगर शिक्षा की मौत का कुआं है, तो वहां कई मुख्यमंत्री, कई विधायक और कई सांसद दोषी नजर आएंगे, लेकिन उस वकालत को जनता याद करेगी जब धर्मशाला के तत्कालीन विधायक किशन कपूर ने कहा था कि उनके हलके की यह औकात नहीं कि दो गज जमीन भी इसके लिए उपलब्ध हो। वैसे जिस शहर को कभी कांग्रेस सरकार ने हिमाचल की दूसरी राजधानी का दर्जा देते हुए यहां से विधानसभा के शीतकालीन सत्र का आगाज किया, वहां अब सरकारें उसकी जेब से कभी मेडिकल कालेज, कभी केंद्रीय विश्वविद्यालय और कभी कार्यालयों को छीन रही हैं। राजनीति का वीभत्स चेहरा देखना हो तो धर्मशाला के जदरांगल में प्रस्तावित जमीन के हर खूंटे पर अनेक चेहरे मिल जाएंगे। आश्चर्य यह है कि ज्वालाजी जैसी विधानसभा में तीन डिग्री कालेज खुल सकते हैं या अनेक विधानसभा क्षेत्रों में दो-दो महाविद्यालय चला दिए जाते हैं, लेकिन धर्मशाला में अंग्रेजी हुकूमत से चल रहे महाविद्यालय व चिकित्सालय के महत्त्व को खत्म करके राजनीति जीतना चाहती है।

राय

पैंतीस करोड़ का नौकर

झारखंड की बदकिस्मती है कि प्रकृति ने उसे खूब संसाधन दिए हैं, बेशकीमती खनिज दिए हैं, लेकिन फिर भी वह गरीब और भ्रष्ट है। दरअसल झारखंड का राजनीतिक नेतृत्व फितरत से ही भ्रष्ट रहा है। बेशक वह शिबू सोरेन हों, नरसिंह राव सरकार बचाने वाले सांसद हों, मुख्यमंत्री रहे मधु कौड़ा और कुछ माह पूर्व तक मुख्यमंत्री रहे हेमंत सोरेन हों, सभी दागदार और भ्रष्ट रहे हैं। जेल में भी रहे हैं। हेमंत सोरेन अब भी प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के मामलों में न्यायिक हिरासत में हैं। कोई पर्यटन करने तो जेल में नहीं जाता! राजनेताओं के अलावा, आईएएस या अन्य शीर्ष अधिकारियों के घरों से भी करोड़ों की नकदी बरामद की गई है। उनके पास अकूत संपत्तियां भी मिली हैं, लिहाजा उन्हें जब्त किया गया है। कई ऐसे सफेदपोश चेहरे जेल की सलाखों के पीछे हैं। झारखंड में धीरज साहू जैसे कांग्रेसी और ओबीसी सांसद भी हैं, जिनके घर और अन्य ठिकानों से 350 करोड़ रुपए से अधिक के नकदी नोट बरामद किए गए। घर के कमरों में नोट ऐसे सजाए गए थे मानो नकदी का कोई शोरूम हो! काली कमाई के ये पहाड़ कैसे संजो लिए जाते हैं, आम आदमी के लिए यह आश्चर्य की मीनारें हैं। साहू जी आज भी सांसद हैं। ईडी ने क्या कार्रवाई की, सब कुछ रहस्य है, क्योंकि हमने ऐसे काले धन्नासेठ को जेल जाते हुए भी नहीं देखा। देश में काले, भ्रष्ट नकदी पहाड़ों के गोदाम भरे हुए हैं, प्रधानमंत्री मोदी का यह कथन कड़वा सच लगता है। देश के कई हिस्सों में ऐसे गोदामों को दबोचा गया है, अदालत में भी केस हैं, लेकिन आम आदमी न्याय का मारा है। बहरहाल ताजातरीन मामला झारखंड सरकार में ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम से परोक्ष रूप से जुड़ा है। उनके निजी सचिव के घरेलू नौकर के घर से 35 करोड़ रुपए से अधिक की 'काली कमाई' बरामद हुई है। आठवां आश्चर्य!!! एक नौकर स्तर का व्यक्ति कितना भी भ्रष्टाचार करे, लेकिन उसके घर बैगों में भरे करोड़ों के नोट बरामद नहीं किए जा सकते। यकीनन इस संदर्भ में उसे 'बलि का बकरा' बनाया गया है। तो फिर सवाल है कि काली कमाई के नोट किसके हैं? क्या नौकर का घर 'कलेक्शन सेंटर' बना था? ईडी के अफसरों को मंत्री के निजी सचिव पर तो शक था, लिहाजा नौकर का पीछा भी किया गया। अक्सर उसके हाथ में एक बैग होता था, लेकिन घर से बाहर आते हुए उसके हाथ खाली होते थे। अंततः ईडी ने छापेमारी की, तो नोटों से भरे बैग मिले और उसी के साथ भ्रष्टाचार का एक रहस्य खुला। सवाल मंत्री के कारनामों पर भी है, क्योंकि ईडी ने जिन इंजीनियरों और अन्य कर्मचारियों की धरपकड़ की है, उनमें से कइयों ने मंत्री की संलिप्तता का भी खुलासा किया है। दलाली का एक खेल उस विभाग में खेला जा रहा था। ठेका देने के बदले 3 फीसदी की दलाली ली जाती थी। मंत्री और निजी सचिव की 'कटमनी' ज्यादा और अलग थी। अफसरों की पोस्टिंग और ट्रांसफर की बोलियां अलग से लगती थीं। यह जांच एजेंसियों का दुरुपयोग नहीं, बल्कि आम आदमी से भ्रष्ट जमात ने जो भी लूटा है, उसकी पाई-पाई वापस वसूली जानी चाहिए। हम मानते हैं कि ईडी मंत्री पर साक्ष्यों और गवाहों के बिना हाथ नहीं डालेगा, लेकिन यह भ्रष्टाचार देश के कोने-कोने में कब तक जारी रहेगा। घूस और दलाली तो व्यवहार बन गए हैं। प्रधानमंत्री प्रतिबद्ध दिखते हैं कि वह ऐसी एक भी पाई खाने नहीं देंगे। ऐसी चोरी बंद करके रहेंगे। भ्रष्ट लोगों की कमाई और लूट बंद करके रहेंगे, बेशक भ्रष्टाचारी उन्हें गालियां देते रहें। झारखंड पर 1.30 लाख करोड़ रुपए का कर्ज है। राज्य के नागरिक की औसत कमाई 7000 रुपए माहवार है। देश के राज्यों में विकास के मद्देनजर झारखंड का स्थान 30वां है।

कठिन सच का धरना

आपको कितने दिन हो गए, सडक़ पर धरना लगाए? उन्होंने हमें पूछा था। अब ऐसी बातों का भी भला कोई जवाब हो सकता है। बहुत कोंचोगे तो यही जवाब देंगे कि 'साब सडक़ पर तो हमारा हमेशा धरना दे रहा है, आप हमारे धरने के दिन न गिनिये। कोशिश कीजिए कि साम, दाम, दंड, भेद की कोई भी नीति अपनाकर यह धरना उठाना है।' हमारा यह धरना वैसे अभी नहीं बहुत दिन से है। होश संभाली तो पता चला कि यहां अक्ल और रुचि नहीं, सिफारिश और सिक्कों की चमक देखी जाती है। जब इसके धनुर्धारी इन सब सीटों को हथिया लेते हैं, तो हमारे लिए जो बचता हैस वह है सडक़ छाप पाठशाला और अर्थिक संकट में घिरे हुए विश्वविद्यालय, जिसके उपकुलपति आर्थिक तंगी से परेशान होकर इस्तीफा भी दे जाएं तो किसी के कानों पर जूं नहीं रेंगती। एक अनार है और सौ बीमार हैं। एक इस्तीफा देकर अनोखा कार्य करता है तो बाईस उसकी जगह लेने को तैयार बैठे हैं। लोग तो भई आजकल गद्दी छोड़ते कहां हैं? जाने की तैयारी कर भी लें तो अपना नाती-पोता वहां भिड़ा जाते हैं। ये साब बीते युग के आदर्शों का रोना रोते हुए इस्तीफा दे गए तो इनकी अक्ल का मातम ही मनाया जा सकता है। देखो न एक भी हाथ उनके समर्थन में नहीं उठाए किसी समूह ने उनके हक में धरना नहीं लगाया। वे लोग, जब से होश संभाली, अपने साथ होती ऊंच-नीच के विरोध में धरना लगाने की बस सोचते रहे हैं, लेकिन ऐसी बातों पर भी कोई धरना लगाता है कि आपको सही जगह पढने के लिए नहीं मिली। योग्यता अनुसार नौकरी नहीं मिली। मेहनत करके फसल की बिजाई की तो उसका सही मूल्य नहीं मिला।

अनुदान बंटने लगा तो वंचितों से अधिक उसके दलाल प्रमुख हो गए? स्वनाम धन्य नेता इस जर्जर देश का बोझ उठाते-उठाते दोहरे हो गए। उनका दारुण दुख देखा नहीं जाता। उनके हक में भाषण दिए जा सकते हैं लेकिन उनके लिए धरने नहीं लगाए जा सकते। हां यह अवश्य किया जा सकता है अगर किसी समूह ने न्याय के लिए धरना लगा दिया, तो उसे तारपीडो करने के लिए उन्हें देशद्रोही, विपक्ष की कठपुतलियां या फर्जी करार दे दिया जाए। धरने वालों को इस प्रकार थका दिया जाए, बस वे घिघिया कर स्वयं ही नाममात्र शर्तों के साथ फैसला करने के लिए बढ़ आएंगे और समय की सरकार उदारता दिखाते हुए कह देगी कि लीजिए जनाब हमसे आपका दुख देखा नहीं जाता था, इसलिए हमने स्वयं ही आपकी समस्याओं का हल तलाश लिया। आपको समझ नहीं आई, अब आपको समझाने के लिए बुकलैट छापे जा रहे हैं। हर बात को नम्बर बार समझाया जा रहा है। बड़े-बड़े सिपहसालार मैदान में उतारे जा रहे हैं, जो आपकी समझ का मातम मनाते हुए आपको असली बात समझाएंगे कि देखो भई ये कदम अमीरों के हक में नहीं, उस बोसीदा जर्जर ढांचे को नष्ट करने के लिए उठाए जा रहे हैं।

आपको यह बताना पड़ेगा कि सदियों से खेतीबाड़ी कर रहे हो, और महाजनी सभ्यता के बंधक हो। गैर हाजिर जमींदार आपको अपनी कूवत और पैसे के बल पर भागीदार कहते हुए भी आपकी मेहनत को किसी किनारे नहीं लगने देते थे। हमारा खेती प्रधान देश है। दो तिहाई जनता आज भी गांवों में छत तलाशती है, आधी आबादी खेती में लगी है, लेकिन जमींदार साहूकार और आढ़तियों की धौंस इस तरह कि आप आज भी धरना लगाए बैठे हो कि हमें तो अभी धनी किसान के साथ बटाई, साहूकार से कर्जा और आढ़तिए के साथ सौदा करना है। हमारे जाने पहचाने हैं, अपना मारेगा तो भी जगह देख कर मारेगा। वंचित रहे तो क्या?

सुरेश सेठ

विचार

भारत में अरबपति राज व बढ़ती गरीबी

सेंटर ऑफ इकोनॉमिक्स एंड बिजनेस रिसर्च का भी मानना है कि 2030 तक भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी। ऐसे में भारत में गरीबी की बढ़ती खाई को पाटने की तत्काल जरूरत है। भारत में जनसंख्या नियंत्रण एवं स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण, स्वच्छता और रोजगार जैसे क्षेत्रों में तेजी से सुधार और लोगों के जीवनस्तर में उत्थान द्वारा ही सामाजिक असमानता पर काबू पाया जा सकता है। इसके लिए सरकारों को निरंतर आर्थिक विकास के लिए नीतियों और कार्यक्रमों को विकसित करना और लागू करना होगा'

18वीं लोकसभा चुनावों में इस बार भी गरीबी एक बड़ा मुद्दा बना हुआ है, लेकिन वहीं दूसरी तरफ भारत के सबसे अमीर एक फीसदी लोगों की कमाई एवं संपत्ति और आर्थिक असमानता अपने ऐतिहासिक उच्चतम स्तर पर है। वर्ल्ड इनइक्वलिटी लैब ने अपनी रिपोर्ट में यह जानकारी दी है। थॉमस पिकेटी, लुकास चांसल और नितिन कुमार भारती द्वारा लिखी गई रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के सबसे अमीर एक प्रतिशत लोगों के पास देश की कुल संपत्ति का करीब 40.1 फीसदी हिस्सा है। वहीं देश की कुल आय में उनकी हिस्सेदारी करीब 22.6 प्रतिशत है। यह अब तक का सबसे ऊंचा स्तर है। यहां तक कि इसने अमरीका जैसे विकसित देशों के अमीरों को भी पीछे छोड़ दिया है। रिपोर्ट के अनुसार सबसे अमीर लोगों ने सांठगांठ वाले पूंजीवाद और विरासत के जरिए बनाई गई संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा हड़प लिया है और वे बहुत तेज गति से अमीर हो रहे हैं। पिछले तीन दशकों से भारत में आर्थिक असमानता तेजी से बढ़ी है। इसी बीच केंद्र सरकार का ऋण भी बढ़ा है, लेकिन गरीबी अपनी जगह बरकरार है। वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी के अनुसार 31 मार्च 2014 को केंद्र सरकार का कर्ज 58.6 लाख करोड़ (जीडीपी का 52.2 प्रतिशत) रुपए था, जो 31 मार्च 2023 को बढक़र 155.6 लाख करोड़ रुपए (जीडीपी का 57.1 प्रतिशत) हो गया है। वहीं 2014-15 से शुरू होने वाले पिछले नौ वित्तीय वर्षों में भारतीय बैंकों ने 14.56 लाख करोड़ रुपए के बुरे ऋण माफ किए हैं। कुल 1456226 करोड़ रुपए में से बड़े उद्योगों और सेवाओं के बट्टे खाते में डाले गए ऋण 740968 करोड़ रुपए थे।

जाहिर है इसका फायदा भी बड़े उद्योगपतियों को ही मिला है। वे बहुत तेज गति से अमीर हो रहे हैं, जबकि गरीब अभी भी न्यूनतम वेतन अर्जित करने और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंचने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। केंद्र सरकार ने इकोनॉमी को बूस्ट देने के नाम पर 2019 में कार्पोरेट टैक्स को घटाने का ऐलान किया था। इस ऐलान के बाद घरेलू कंपनियों को जो कार्पोरेट टैक्स पहले 30 फीसदी की दर से देना होता था वो घटकर 22 फीसदी हो गया है। जाहिर है इस तरीके से भी उद्योगपतियों को ही लाभ हुआ है। कोरोना संकट के तुरंत बाद लोगों को न केवल अपनी नौकरियों से हाथ धोना पड़ा था बल्कि बड़ी संख्या में कामगारों और मजदूरों का पलायन भी हुआ था। ऊपर से 2020 में बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भी सीमित मात्रा में रिक्रूटमेंट की थी। इससे हमारे युवाओं को भारी निराशा का सामना करना पड़ा था। सीएमआईई के अनुसार, भारत में बेरोजगारी दर मार्च 2024 में 7.4 प्रतिशत से बढक़र अप्रैल 2024 में 8.1 प्रतिशत हो गई है। महंगाई एवं बेरोजगारी आज भी भारतीय नागरिकों के लिए बड़े मुद्दे बने हुए हैं। यद्यपि भारत में लोगों ने शिक्षा और रोजगार के महत्व को समझा है, तथापि गरीबी के आंकड़े बयां करते हैं कि भारत में पिछले कुछ दशकों में अमीरी-गरीबी के बीच खाई और चौड़ी हुई है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा 2015-16 में जारी रिपोर्ट के अनुसार भारत में 36.40 करोड़ लोग गरीब थे, वहीं नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार भारत में गरीबी दर 2013-14 में 29.17 प्रतिशत से घटकर 2022-23 में 11.28 प्रतिशत रह गई है। यानी कि पिछले 9 सालों में 17.89 प्रतिशत की कमी आई। फिर यह सवाल उठना लाजिमी ही है कि यदि नीति आयोग के आंकड़ों के अनुसार गरीबी घटी है तो 80 करोड़ लोगों में पांच किलोग्राम राशन मुफ्त किसलिए बांटा जा रहा है? आज आवश्यकता इस बात की ज्यादा है कि भारत सरकार के वित्त मंत्रालय और आयकर विभाग सर्वाधिक अमीरों से ज्यादा टैक्स वसूलने और उन व्यापारियों पर नकेल कसें जो गलत ब्यौरा देकर अथवा अपनी वास्तविक आय को छुपाकर बेनामी संपत्ति बना रहे हैं। आज बड़े कस्बों और शहरों में ऐसे लाखों कारोबारी और व्यापारी मिलेंगे जो एमआरपी के नाम पर मोटी कमाई कर अकूत दौलत इक_ी कर रहे हैं। लेकिन सरकार को मामूली टैक्स देकर अंगूठा दिखा रहे हैं। ऐसे लोगों की परिसंपत्तियों की जांच होनी चाहिए और उन पर जुर्माना लगाकर उनको भी टैक्स पेयर्स के दायरे में लाया जाना चाहिए। वहीं सरकारी एवं निजी क्षेत्र के कर्मचारियों को राहत पहुंचाने की भी जरूरत है जो ईमानदारी से अपना इनकम टैक्स चुका कर राष्ट्र सेवा कर रहे हैं। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया का दावा है कि भारतीय अर्थव्यवस्था कोविड-19 संकट के दबाव से बाहर निकल चुकी है।

सेंटर ऑफ इकोनॉमिक्स एंड बिजनेस रिसर्च का भी मानना है कि 2030 तक भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी। ऐसे में भारत में गरीबी की बढ़ती खाई को पाटने की तत्काल जरूरत है। भारत में जनसंख्या नियंत्रण एवं स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण, स्वच्छता और रोजगार जैसे क्षेत्रों में तेजी से सुधार और लोगों के जीवनस्तर में उत्थान द्वारा ही सामाजिक असमानता पर काबू पाया जा सकता है। इसके लिए सरकारों को निरंतर आर्थिक विकास के लिए नीतियों और कार्यक्रमों को विकसित करना और लागू करना होगा। कहते हैं रात भले ही कितनी भी काली क्यों न हो लेकिन सूर्य की किरणें अपनी रोशनी से चहुं ओर उजाला फैला ही देती हैं। बकौल कवि गोपाल दास नीरज, 'मेरे देश उदास न हो फिर दीप जलेगा तिमिर ढलेगा।' आशा है कि 18वीं लोकसभा के चुनावों के बाद आने वाली केंद्र सरकार भारत की अवाम के लिए खुशियों का पिटारा लेकर आएगी और गरीबी के कलंक से मुक्ति मिलेगी।

अनुज आचार्य

पेटीएम में दो दिन लोअर सर्किट लगने के बाद आज आई तेजी, स्टॉक को रखें या फिर बेचें?

परिवहन विशेष न्यूज

फिनटेक कंपनी पेटीएम (Paytm) अभी चर्चा का विषय है। कंपनी के शेयरों में उतार-चढ़ाव जारी है। गुरुवार के सत्र में पेटीएम के शेयर में अपर सर्किट लगा जबकि बुधवार को पेटीएम स्टॉक में लोअर सर्किट लगा था। ऐसे में पेटीएम के शेयर को लेकर निवेशक कंफ्यूज हैं कि वह उसे बेचें या फिर खरीदें। आइए कंपनी के स्टॉक के परफॉर्मेंस के बारे में जानते हैं।

गुरुवार के शुरुआती सत्र में पेटीएम 310 रुपये पर खुला था, यानी कि ऑल-टाइम लो पर खुला था। बाद में इसमें तेजी आई और यह 333 रुपये प्रति शेयर पर पहुंच गया। बता दें पेटीएम का शेयर मार्केट में वन 97 कम्युनिकेशंस लिमिटेड के नाम से सूचीबद्ध है। पेटीएम के शेयर में जारी उतार-चढ़ाव के बाद निवेशक काफी कंफ्यूज हैं कि वह इसके शेयर खरीदें या फिर जिनके पास हैं वह बेच दें।

नई दिल्ली। शेयर बाजार में भारी गिरावट आई है। दोनों सूचकांक निचले स्तर पर बंद हुए हैं। बाजार में आई इस गिरावट से निवेशकों को 3 लाख करोड़ से ज्यादा का नुकसान हुआ है।

बाजार में जारी इस गिरावट के बीच पेटीएम (Paytm share) के शेयर आज फोकस में हैं। आज पेटीएम के शेयर में अपर सर्किट लगा था, जबकि बुधवार को शेयर ने लोअर सर्किट को टच किया। दरअसल, आरबीआई द्वारा पेटीएम पेमेंट्स बैंक (Paytm Payments Bank) पर प्रतिबंध लगाने के बाद पेटीएम के शेयर (Paytm Share) में उतार-चढ़ाव आया है।

गुरुवार के शुरुआती सत्र में पेटीएम 310 रुपये पर खुला था, यानी कि ऑल-टाइम लो पर खुला था। बाद में इसमें तेजी आई और यह 333 रुपये प्रति शेयर पर पहुंच गया।

बता दें पेटीएम का शेयर मार्केट में वन 97 कम्युनिकेशंस लिमिटेड के नाम से सूचीबद्ध है। पेटीएम के शेयर में जारी उतार-चढ़ाव के बाद निवेशक काफी कंफ्यूज हैं कि वह इसके शेयर खरीदें या फिर जिनके पास हैं वह बेच दें।

पेटीएम शेयर की परफॉर्मेंस

अगर पेटीएम के शेयर की परफॉर्मेंस की बात करें तो आरबीआई द्वारा लिए गए एक्शन के बाद कंपनी के शेयर में भारी गिरावट आई है। पिछले 1 महीने में पेटीएम के शेयर से निवेशकों को 16.86 फीसदी का नुकसान हुआ है। वहीं, 6 महीने में कंपनी के स्टॉक का रिटर्न नेगेटिव में 62.76 फीसदी और 1 साल में नेगेटिव में 54.26 फीसदी था।

स्टॉक एक्सचेंज एनएसई की वेबसाइट के अनुसार वन 97 कम्युनिकेशंस लिमिटेड का बाजार पूंजीकरण 21,168.98 करोड़ रुपये है।

तो इस वजह से कम होती जा रही है आपकी बचत, क्या 2024 में आरबीआई के कदमों का दिखेगा असर?

नई दिल्ली। होम और ऑटो लोन पर बढ़ते ब्याज के चलते लगातार तीसरे साल वित्त वर्ष 2023-24 में घरेलू बचत में गिरावट आने का अनुमान है। हालांकि, पर्सनल लोन पर आरबीआई के अंकुश से 2024-25 में यह प्रवृत्ति उलट सकती है। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय की ओर से जारी ताजा राष्ट्रीय खाता सांख्यिकी-2024 के अनुसार, शुद्ध घरेलू बचत तीन वर्षों में 2022-23 तक नौ लाख करोड़ रुपये की गिरावट के साथ 14.16 लाख करोड़ रुपये रह गई।

रेटिंग एजेंसी इक्रा की मुख्य अर्थशास्त्री अदिति नायर ने कहा कि 2022-23 में घरेलू बचत में गिरावट की मुख्य वजह देनदारियों में सालाना आधार पर 73 प्रतिशत की वृद्धि रही। उन्होंने कहा कि आंकड़ों पर गौर करें तो बीते वित्त वर्ष 2023-24 में भी घरेलू बचत में गिरावट की प्रवृत्ति जारी रहने का अनुमान है। घरेलू बचत से जुड़े आंकड़े अभी जारी नहीं किए गए हैं।

नायर ने कहा कि हालांकि 2024-25 में यह प्रवृत्ति उलट सकती है, क्योंकि आरबीआई ने बिना गारंटी वाले पर्सनल लोन पर अंकुश लगाने के लिए कदम उठाए हैं।

मुख्य आर्थिक सलाहकार वी. अनंत नागेश्वरन ने इस गिरावट की वजह पोर्टफोलियो में बदलाव को बताया, जहां बचत को वास्तविक परिसंपत्तियों में लगाया जा रहा है। वित्त वर्ष 2020-21 में घरेलू बचत 23.29 लाख करोड़ रुपये के रिकार्ड स्तर पर पहुंच गई थी। उस साल कोरोना की दूसरी लहर आई थी। हालांकि, उसके बाद से इसमें गिरावट जारी है। इसके बाद यह 2021-22 में यह 17.12 लाख करोड़ रुपये और 2022-23 में 14.16 लाख करोड़ रुपये पर आ गई। वित्तीय निकायों और एनबीएफसी द्वारा परिवारों को दिए गया ऋण 2022-23 में चार गुना होकर 3.33 लाख करोड़ रुपये हो गया। यह 2020-21 में 93,723 करोड़ रुपये था। वित्त वर्ष 2021-22 के 1.92 लाख करोड़ रुपये के ऋण की तुलना में 2022-23 में यह 73 प्रतिशत बढ़ा।

नागेश्वरन ने कहा, "वित्त वर्ष 2022-23 में घरेलू शुद्ध वित्तीय बचत कम रही और इसे लेकर कुछ चिंताएं थीं। इससे पता चला कि घरेलू बचत कम हो रही है, लेकिन वास्तव में यह एक पोर्टफोलियो बदलाव था जहां बचत वास्तविक परिसंपत्तियों में जा रही थी।"

भारत को विकास की गति बनाए रखने के लिए बुजुर्गों को स्वास्थ्य बीमा के दायरे में लाने की जरूरत

एडीबी की एक रिपोर्ट में पता चला है कि वृद्ध लोगों के लिए स्वास्थ्य बीमा के मामले में भारत एशिया प्रशांत देशों में सबसे निचले देशों में से एक है और तेजी से बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने और विकास की गति को बनाए रखने के लिए सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज का विस्तार करने की जरूरत है एक रिपोर्ट में यह बात सामने आई है।

नई दिल्ली। एडीबी की एक रिपोर्ट में जानकारी सामने आई है कि वृद्ध लोगों के लिए स्वास्थ्य बीमा के मामले में भारत एशिया प्रशांत देशों में सबसे निचले देशों में से एक है और तेजी से बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने और विकास की गति को बनाए रखने के लिए सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज का विस्तार करने की जरूरत है, एक रिपोर्ट में यह बात सामने आई है।

एडीबी द्वारा तैयार 'एजिंग वेल इन एशिया' शीर्षक वाली एक रिपोर्ट में कहा गया है कि दक्षिण कोरिया और थाईलैंड ने सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज हासिल कर लिया है, जबकि अन्य देश पीछे हैं, जहां भारत में वृद्ध लोगों के बीच सबसे कम 21 प्रतिशत स्वास्थ्य बीमा कवरेज है।

कैशलेस स्वास्थ्य सेवा

हालांकि, एडीबी के वरिष्ठ अर्थशास्त्री एइको किक्कावा ने यहां कहा कि आयुष्मान भारत जैसी योजनाएं जो आबादी के निचले हिस्से को कैशलेस स्वास्थ्य सेवा देती हैं, उनके लॉन्च के बाद से स्वास्थ्य कवरेज में सुधार हुआ है।

उन्होंने कहा कि इसे और विस्तारित करने से स्थिति में सुधार होगा और 60 वर्ष से अधिक आयु के लोग अर्थव्यवस्था के लिए अधिक उत्पादक बनेंगे, उन्होंने कहा, ऐसे देशों के लिए चांदी का लाभांश अधिक हो सकता है जो उन्हें लाभप्रद रूप से रोजगार देते हैं।

उन्होंने कहा, सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज हासिल करने के अलावा, वृद्ध लोगों की शारीरिक और कार्यात्मक क्षमता को अनुकूलित करने वाली आवश्यक सेवाओं और हस्तक्षेपों का विस्तार करना भी महत्वपूर्ण है। इसमें कहा गया है कि बांग्लादेश, इंडोनेशिया और भारत में, स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच से वंचित आधे से अधिक लोग निचले दो धन क्विंटल में हैं। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि 2031-40 के दौरान उम्रदराज आबादी के कारण आर्थिक विकास पर प्रभाव भारत के मामले में कम होगा क्योंकि यहां अभी भी युवा आबादी अधिक होगी।

अक्षय तृतीया से पहले सस्ता हुआ सोना-चांदी, जानिए क्या हैं नए भाव

अक्षय तृतीय से ठीक पहले सोने और चांदी की कीमत में कटौती देखने को मिली। 9 मई को दिल्ली में सोना 50 रुपये की गिरावट के साथ 72250 रुपये प्रति दस ग्राम पर बंद हुआ। इससे पहले बुधवार को सोने की कीमत 72300 रुपये दस ग्राम पर थी। वहीं चांदी 1500 रुपये टूटकर 83200 रुपये प्रति किलो पर पहुंच गया है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। सोने और चांदी की कीमत में गिरावट जारी है। अक्षय तृतीय से ठीक पहले गुरुवार को राजधानी दिल्ली में इन दोनों धातुओं की कीमत में कटौती देखने को मिली। ग्लोबल मार्केट से भी इनकी कीमत में कमी के रुझान देखने को मिले हैं।

सोने-चांदी की कीमत में कटौती

HDFC Securities के मुताबिक, 9 मई को दिल्ली में सोना 50 रुपये की गिरावट के साथ 72,250 रुपये प्रति दस ग्राम पर बंद हुआ। इससे पहले बुधवार को सोने की कीमत 72,300 रुपये दस ग्राम पर थी।

समाचार एजेंसी पीटीआई ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि चांदी की कीमत में भी गिरावट देखने को मिली है।

आज (9 मई) 1,500 रुपये की गिरावट के साथ चांदी की कीमत 83,200 रुपये प्रति किलो पर पहुंच गई। इससे पहले बुधवार को इसकी कीमत 84,700 रुपये प्रति किलो थी।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी गिरा सोना

एचडीएफसी सिक्योरिटीज के सीनियर कमोडिटी एनालिस्ट सौमिल गांधी ने बताया कि दिल्ली में सोना (24 कैरेट) गुरुवार को 50 रुपये टूटकर 72,250 रुपये प्रति दस ग्राम पर ट्रेड कर रहा है। सोने की कीमत में गिरावट इंटरनेशनल मार्केट में भी देखने को मिली।

Comex की बात करें तो यहां सोना 2,308 डॉलर प्रति ओन्स पर ट्रेड कर रहा है, जो पिछले कारोबारी सत्र के मुकाबले इसमें 2 डॉलर की कमी देखने को मिली है। सौमिल बताते हैं कि सोने की कीमत में गिरावट की वजह अमेरिका में महंगाई और फेड के ब्याज दरों पर फेड के रुख के चलते देखने को मिली है।

दिल्ली में चांदी की कीमत आज 83,200 रुपये प्रति किलो रही। इसमें 1500 रुपये की गिरावट देखने को मिली है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में चांदी कीमत में 27.50 डॉलर प्रति ओन्स रही। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के मुताबिक पिछले कारोबारी सत्र के मुकाबले में इसमें तेजी देखने को मिली है।

TCS के CEO ने पिछले साल ली इतनी सैलरी, कंपनी के COO की इनकम जान उड़ जाएंगे होश

TCS के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक के कृतिवासन ने वित्त वर्ष 2024 में 25 करोड़ रुपये से अधिक का वेतन लिया। सालाना रिपोर्ट के अनुसार कृतिवासन ने वित्तीय वर्ष के दौरान 3.08 करोड़ रुपये के लाभ अनुलाभ और भत्ते के साथ 1.27 करोड़ रुपये का वेतन अर्जित किया और 21 करोड़ रुपये का कमीशन प्राप्त किया। आइये इसके बारे में जानते हैं।

नईदिल्ली। कंपनी ने गुरुवार को कहा कि टीसीएस के नवनियुक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक के कृतिवासन ने वित्त वर्ष 2024 में 25 करोड़ रुपये से अधिक का वेतन लिया। राजेश गोपीनाथन के आश्चर्यजनक रूप से बाहर निकलने के बाद कृतिवासन ने जून 2023 में देश के सबसे बड़े आईटी सेवा निर्यातक के प्रमुख के रूप में कार्यभार संभाला। उनकी नियुक्ति पांच साल की अवधि के लिए है।

कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, कृतिवासन ने वित्तीय वर्ष के दौरान 3.08 करोड़ रुपये के लाभ, अनुलाभ और भत्ते के साथ 1.27 करोड़ रुपये का वेतन अर्जित किया और 21 करोड़ रुपये का कमीशन प्राप्त किया।

इसमें कहा गया है कि कमाई में टीसीएस के सबसे बड़े बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं और बीमा के वैश्विक प्रमुख के रूप में उनका मुआवजा शामिल है। दिलचस्प बात यह है कि कंपनी के मुख्य परिचालन अधिकारी एन जी सुब्रमण्यम ने वित्तीय वर्ष के दौरान 26.18 करोड़ रुपये कमाए।

TCS प्रमुख की क्या है सैलरी

सुब्रमण्यम, जो जल्द ही कंपनी से सेवानिवृत्त होने वाले हैं, पूरे वर्ष के लिए इस पद पर थे और उनकी परिलब्धियों में 1.72 करोड़ रुपये का वेतन शामिल था; लाभ, अनुलाभ और भत्ते में 3.45 करोड़ रुपये और कमीशन में 21 करोड़ रुपये है।

कंपनी ने कहा कि COO के पारिश्रमिक में 8.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, पदनाम में बदलाव के कारण कृतिवासन की कमाई में वृद्धि की तुलना नहीं की जा सकती है।

वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि सीईओ के रूप में अपनी दो महीने की सेवा के लिए गोपीनाथन ने वेतन में 33.6 लाख रुपये और लाभ, अनुलाभ और भत्ते में 76.8 लाख रुपये कमाए।

सीओओ का पारिश्रमिक उसके कर्मचारियों के औसत पारिश्रमिक का 346.2 गुना है, जो 31 मार्च, 2024 तक 6,01,546 रुपये था।

रिपोर्ट में कहा गया है कि औसत वार्षिक वृद्धि 5.5-8 प्रतिशत की सीमा में थी, शीर्ष प्रदर्शन करने वालों को भारत में दोहरे अंकों में वेतन वृद्धि प्राप्त हुई।

कंपनी ने कहा कि वित्त वर्ष के अंत में कार्यबल में 35.6 प्रतिशत महिलाएं थीं।

कंपनी, जो इस क्षेत्र में कर्मचारियों को कार्यालयों से वापस काम करने के लिए प्रेरित करने वाली पहली कंपनियों में से एक थी, इसके लगभग 55 प्रतिशत कर्मचारी सप्ताह के सभी कार्य दिवसों पर कार्यालय से काम करते हैं।

कुल राजस्व वृद्धि में आई कमी

वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि कई वैश्विक प्रतिकूलताओं के कारण व्यवसाय के लिए निकट अवधि में अनिश्चितता है, लेकिन इस बात पर जोर दिया गया है कि मध्यम से लंबी अवधि में विकास की संभावना है।

वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि वित्त वर्ष 2024 में कुल राजस्व वृद्धि धीमी होकर 6.8 प्रतिशत हो गई, जो एक साल पहले की अवधि में 17.6 प्रतिशत थी।

वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है, ₹अगर वित्त वर्ष 2024 तक कुछ क्षेत्रों में निर्णय लेने में देरी और नकदी संरक्षण अगले वित्तीय वर्ष में भी जारी रहता है, तो इससे वित्त वर्ष 2025 में विकास में नरमी आ सकती है।₹

इसके अध्यक्ष एन चंद्रशेखरन ने कहा कि जेनएआई प्रौद्योगिकियां आगे चलकर लगभग हर क्षेत्र और देश को प्रभावित करेंगी और उद्यम पहले ही क्लाउड, डेटा इंफ्रास्ट्रक्चर और बड़ी प्रोसेसिंग पावर में निवेश कर चुके हैं।

उन्होंने कहा कि जेनएआई न केवल उत्पादकता में सुधार करेगा बल्कि एक ऐसा प्रभाव भी पैदा करेगा जो हमने अब तक नहीं देखा या कल्पना नहीं की थी।

बीएसई पर 0.45 प्रतिशत गिरकर 3,954.80 रुपये पर कारोबार कर रहे थे, जबकि 1443 बजे बेंचमार्क पर 1.23 प्रतिशत सुधार हुआ था।

पंजाब नेशनल बैंक को हुआ तगड़ा मुनाफा, पिछले साल की तुलना में तीन गुना बढ़ा प्रॉफिट

PNB Q4 Result पब्लिक सेक्टर का पंजाब नेशनल बैंक (PNB) ने कारोबारी साल 2024 के आखिरी तिमाही के नतीजे जारी कर दिये हैं। बैंक ने बताया कि इस तिमाही उनका मुनाफा पिछले साल की तुलना तीन गुना बढ़ गया है। बैंक को हुए इस तगड़े मुनाफे के बावजूद शेयर में गिरावट देखने को मिली है। बैंक के शेयर आज 1 फीसदी गिरकर कारोबार कर रहा है।

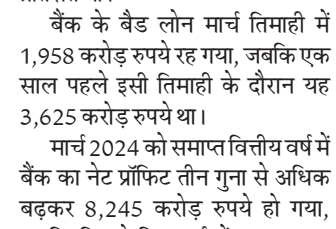

नई दिल्ली। सरकारी बैंक पंजाब नेशनल बैंक ने पिछले वित्त वर्ष के चौथी तिमाही के नतीजे जारी कर दिये हैं। बैंक ने बताया कि मार्च तिमाही मेंउन्हें तगड़ा मुनाफा हुआ है। इस तिमाही बैंक के इनकम में सुधार के साथ बैड लोन में भी गिरावट देखने को मिली है।

पंजाब नेशनल बैंक की कैसी रही फाइनेंशियल परफॉर्मेंस

पीएनबी का चौथी तिमाही में नेट प्रॉफिट 3,010 करोड़ रुपये हो गया। एक साल पहले इसी तिमाही में बैंक ने 1,159 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया था।

पीएनबी ने नियामक फाइलिंग में कहा कि मार्च तिमाही के दौरान कुल इनकम बढ़कर 32,361 करोड़ रुपये हो गई, जो पिछले साल की समान अवधि में 27,269 करोड़ रुपये थी।

बैंक ने बताया कि इस अवधि में उनके इंटरेस्ट से होने वाली इनकम बढ़कर 28,113 करोड़ रुपये हो गई, जो एक साल पहले इसी तिमाही में 23,849 करोड़ रुपये थी।

बैंक की सकल गैर-निष्पादित संपत्ति (एनपीए) मार्च 2023 के अंत में 8.74 फीसदी से घटकर 31 मार्च, 2024 तक 5.73 प्रतिशत हो गई। पिछले साल की इसी तिमाही में बैंक का एनपीए 2.72 प्रतिशत था।

बैंक के बैड लोन मार्च तिमाही में 1,958 करोड़ रुपये रह गया, जबकि एक साल पहले इसी तिमाही के दौरान यह 3,625 करोड़ रुपये था।

मार्च 2024 को समाप्त वित्तीय वर्ष में बैंक का नेट प्रॉफिट तीन गुना से अधिक बढ़कर 8,245 करोड़ रुपये हो गया, जबकि पिछले वित्त वर्ष में यह 2,507 करोड़ रुपये था।

पीएनबी का सीआरएआर 31 मार्च, 2023 को 15.50 प्रतिशत से बढ़कर 15.97 प्रतिशत हो गया।

बैंक ने शानदार तिमाही नतीजों के साथ शेयरधारकों को 1.5 रुपये प्रति शेयर का लाभांश देने का एलान किया है। इसका मतलब है कि निवेशकों को प्रति शेयर पर 75 फीसदी का डिविडेंड मिलेगा।

पीएनबी के शेयर का हाल

आज पंजाब नेशन बैंक के शेयर गिरावट के साथ कारोबार कर रहे हैं। खबर लिखते वक्त बैंक के शेयर 1.56 फीसदी की गिरावट के साथ 122.85 प्रति शेयर पर कारोबार कर रहा है। अगर बैंक के स्टॉक की परफॉर्मेंस की बात करें तो बैंक ने पिछले 1 साल में 150 फीसदी और पिछले 6 महीने में 60 फीसदी से ज्यादा का रिटर्न दिया है।

सैम पित्रोदा के बयान के विरोध में दिल्ली भातपा का प्रदर्शन, पुलिस ने कई कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया

वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि तीन चरण के बाद कांग्रेस को अपनी जमीन खिसकती देख अब कांग्रेस नेता रंगभेदी टिप्पणी कर रहे हैं। यह देश की अखंडता को तोड़ने वाला है। देश को नुकसान पहुंचाने वाली ताकतों को भाजपा कार्यकर्ता मुंहतोड़ जवाब देंगे। सांसद रमेश बिधूड़ी ने कहा देश का अपमान किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। कांग्रेस की मानसिकता देशविरोधी है।

परिवहन विशेष न्यूज

वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि तीन चरण के बाद कांग्रेस को अपनी जमीन खिसकती देख अब कांग्रेस नेता रंगभेदी टिप्पणी कर रहे हैं। यह देश की अखंडता को तोड़ने वाला है। देश को नुकसान पहुंचाने वाली ताकतों को भाजपा कार्यकर्ता मुंहतोड़ जवाब देंगे। सांसद रमेश बिधूड़ी ने कहा देश का अपमान किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। कांग्रेस की मानसिकता देशविरोधी है।

नई दिल्ली। भारतीयों के रंग रूप को लेकर कांग्रेस नेता सैम पित्रोदा के बयान का भाजपा विरोध कर रही है। पित्रोदा ने कहा था कि पूर्व के लोग चीनी और दक्षिण भारतीय अफ्रीकी नागरिकों की तरह रखते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को इसे नस्लवादी टिप्पणी बताते हुए कहा था कि राहुल गांधी को जवाब देना होगा।

बृहस्पतिवार को दिल्ली भाजपा के कार्यकर्ता प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचेदवा के नेतृत्व में प्रदर्शन किया। उन्होंने पित्रोदा से देशवासियों से क्षमा मांगने की मांग की। कांग्रेस से भाजपा में शामिल होने वाले पूर्व मंत्री राजकुमार चौहान, विधायक नसीब सिंह, नीरज बसौया व कांग्रेस नेता अमित मलिक भी प्रदर्शन में शामिल हुए।

देश का अपमान बर्दाश्त नहीं: सचदेवा

सचदेवा ने कहा कि तीन चरण के बाद कांग्रेस को अपनी जमीन खिसकती देख अब कांग्रेस नेता रंगभेदी टिप्पणी कर रहे हैं। यह देश की अखंडता को तोड़ने वाला है। देश को नुकसान पहुंचाने वाली ताकतों को भाजपा कार्यकर्ता मुंहतोड़ जवाब देंगे। सांसद रमेश बिधूड़ी ने कहा, देश का अपमान किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया

जाएगा। कांग्रेस की मानसिकता देशविरोधी है।

कई प्रदर्शनकारी हिरासत में लिए गए

प्रदर्शनकारी जैसलमेर हाउस के नजदीक से नारेबाजी करते हुए कांग्रेस मुख्यालय जाना चाहते थे। बैरिकेड तोड़कर आगे बढ़ रहे सचदेवा व अन्य प्रदर्शनकारियों को पुलिस ने हिरासत में लिया। बाद में उन्हें चेतावनी देकर रिहा कर दिया गया। प्रदर्शन में दिल्ली भाजपा के उपाध्यक्ष दिनेश प्रताप सिंह, गजेंद्र यादव, महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष ऋचा पांडेय मिश्रा, अनुसूचित जाति मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल गिहारा सहित अन्य नेता व कार्यकर्ता शामिल थे।

नबीन पटनायक सब कुछ पंडियन को दे दिया : आसाम मुख्यमंत्री हेमंत बिश्वशर्मा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड उडीशा

भुबनेश्वर : कालीमेला में असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्वशर्मा का भाषण। बिस्व शर्मा ने कहा, हमारे पास असम में 50 लाख बंगाली हैं। दिल्ली में मोदी की सरकार है और मोदी की ही सरकार रहेगी । सब जानते हैं कि मोदी जो कहते हैं वो करते हैं। सरकारी खर्चे पर असम के लाखों लोग राम मंदिर देखने जाएंगे ।यहां बीजेपी की सरकार है, ये 5 लाख लोगों को दर्शन के लिए ले जाएंगे । जब बीजेपी ओडिशा में आएगी तो वहां बंगालियों के लिए बंगाली शिक्षक होंगे। विश्व शर्मा ने एमपीवी-82 नंबर की आलोचना की । गांव का ये नाम इसलिए है क्योंकि यहां नवीन की सरकार चल रही है । नवीन बाबू सिर्फ इतना कहते हैं कि ठीक है, और कुछ नहीं। भाजपा सरकार बनी तो इसे राजस्व ग्राम का दर्जा मिलेगा। भाजपा सरकार आएगी तो नंबर नहीं, गांव का नाम दिया जाएगा। बीजेपी का मुख्यमंत्री बनने के बाद निश्चित तौर पर गांव का नाम बदल जाएगा ।

छत्तीसगढ़ में भाजपा सरकार, 3 हजार में धान खरीदी हो रही है। यहां भाजपा की सरकार आएगी तो 3100 क्विंटल अनाज मिलेगा। धान 31 सौ में खरीदना है, नवीन बाबू 21 सौ दे रहे हैं। असम में महिलाओं को प्रति माह 1250 रुपये मिलते हैं। यहां हमारी सरकार आएगी तो महिलाओं को 50 हजार मिलेंगे । प्रति वर्ष 25 हजार और 2 साल में 50 हजार। मोदी मुफ्त चावल दे रहे हैं । नवीन बाबू पांडियन को सब कुछ दे रहे हैं ।

आरएमएल के अलावा अन्य अस्पतालों में तो नहीं है नेक्सस, डॉक्टरों के मोबाइल से सीबीआई के हाथ लग सकते हैं अहम सबूत

परिवहन विशेष न्यूज

सीबीआई के एक अधिकारी का कहना है कि आरोपितों से पूछताछ में यह पता लग जाएगा कि अस्पताल के डॉक्टरों का नेक्सस कब से चल रहा था। यहां के डाक्टरों व स्वास्थ्यकर्मियों को रिश्वत देकर चिकित्सा उपकरण व महंगी दवा आपूर्ति करने वाली कंपनियों के प्रतिनिधियों का नेक्सस केवल आरएमएल अस्पताल तक ही सीमित है अथवा दिल्ली के अन्य अस्पतालों में भी है।

नई दिल्ली। राम मनोहर लोहिया (आरएमएल) अस्पताल में फैले भ्रष्टाचार के आरोप में सीबीआई ने बृहस्पतिवार को दो और आरोपित को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपितों में आरएमएल अस्पताल की नर्स शालू शर्मा व चिकित्सा उपकरण बनाने वाली एक कंपनी के सेल्स मैनेजर आकर्षण गुलाटी शामिल हैं।

इनसे पहले सीबीआई ने बुधवार को कार्डियोलोजी विभाग के दो वरिष्ठ डॉक्टर अजय राज (प्रोफेसर), डॉक्टर पर्वतगौड़ा (सहायक प्रोफेसर), सीनियर टेक्निकल इंचार्ज, कैथ लैब, रजनीश कुमार, क्लर्क भुवाल जायसवाल, मल्टी टास्किंग कर्मचारी शालू शर्मा, क्लर्क संजय कुमार गुप्ता समेत चिकित्सा उपकरणों की आपूर्ति करने में शामिल नौ आरोपितों को गिरफ्तार किया था।

सीबीआई कर रही गहन पूछताछ

सभी को छह दिन की कस्टडी रिमांड पर लेकर सीबीआई गहन पूछताछ कर रही है। इनके मोबाइल और लैपटॉप को भी सीबीआइ ने जब्त कर लिया है। उम्मीद है कि इनके इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस की जांच करने पर कई अहम सुबूत हाथ लग सकते हैं, जिसके आधार पर भ्रष्टाचार में संलिप्त अस्पताल के डॉक्टरों, नर्सिंग कर्मियों, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों, दलालों व चिकित्सा उपकरणों व दवा आपूर्ति करने वाले आरोपितों की पहचान करने में आसानी होगी।

डॉक्टरों का नेक्सस कब से चल रहा था ?

सीबीआई के एक अधिकारी का कहना है कि आरोपितों से पूछताछ में यह पता लग जाएगा कि अस्पताल के डॉक्टरों का नेक्सस कब से चल रहा था। यहां के डॉक्टरों व स्वास्थ्यकर्मियों को

रिश्वत देकर चिकित्सा उपकरण व महंगी दवा आपूर्ति करने वाली कंपनियों के प्रतिनिधियों का नेक्सस केवल आरएमएल अस्पताल तक ही सीमित है अथवा दिल्ली के अन्य अस्पतालों में भी है।

पूछताछ और इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस की जांच से यह साफ हो पाएगा कि सीबीआई की जांच का दायरा बढ़ेगा अथवा सीमित ही रहेगा। सीबीआई का कहना है जैसे-जैसे अन्य के खिलाफ भ्रष्टाचार में संलिप्त होने की शिकायत मिलेगी उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा। सीबीआई का कहना है कि यह भी शिकायत मिली है कि अस्पताल में भर्ती मरीजों को अगर खून की आवश्यकता होती थी तो नर्सिंग कर्मचारी दलालों के माध्यम से तीमारदारों को खून का बंदोबस्त भी करवा देते थे।

शालू शर्मा इलाज के नाम पर ऐंठती थी पैसे

साथ ही किसी बीमारी का कोई मरीज अगर किसी कारणवश ऑपरेशन की तारीख पर अस्पताल नहीं पहुंच पाते थे तब दलालों के माध्यम से नर्सिंग कर्मचारी रिश्वत लेकर किसी अन्य मरीज को ऑपरेशन की तारीख दिलवा देते थे। सीबीआई इस फर्जीवाड़े की भी जांच कर रही है। शालू शर्मा पर आरोप है कि वह मरीजों के तीमारदारों से डॉक्टरों के पास तुरंत नंबर लगवा इलाज के नाम पर पैसे ऐंठती थी। भुवल जायसवाल भी तीमारदारों से उनके मरीजों का इलाज करवा देने के नाम पर पैसा ऐंठता था।

कंपनियों से मोटी रकम लेने का आरोप

ज्ञात रहे अस्पताल के वरिष्ठ डाक्टरों पर हार्ट के मरीजों को स्टेंट डालने से लेकर चिकित्सा उपकरणों की आपूर्ति करने के नाम पर विभिन्न कंपनियों के डीलरों से मोटी रकम लेने का आरोप है। इसी के मद्देनजर सीबीआइ ने बुधवार को डाक्टरों व चिकित्सा उपकरण आपूर्ति करने वाले डीलर्स के 15 ठिकानों पर छापेमारी कर नौ आरोपित को गिरफ्तार किया था।

पिछले माह सीबीआई को शिकायत मिली थी कि राम मनोहर लोहिया अस्पताल के कई डाक्टर और कर्मचारी भ्रष्टाचार में संलिप्त हैं जो अलग अलग पांच माड्यूल के जरिए रिश्वत ले रहे हैं। उसी के बाद सीबीआई ने भ्रष्टाचार व आपराधिक साजिश रचने की धाराओं में केस दर्ज कर जांच शुरू की थी।

फतेहपुर सीकरी की सलीम चिश्ती की दरगाह और जामा मस्जिद है कामाख्या माता का मंदिर , दावा दायर , नोटिस जारी

खानवा युद्ध में राणा सांगा के बाबर से पराजित होने के बाद सीकरी के शासक धामदेव मां कामाख्या की मूर्ति लेकर गाजीपुर के गांव गहमर चले गए जहां मंदिर स्थापित किया। फतेहपुर सीकरी का पुराना नाम विजयपुर सीकरी, बाबर नाम में भी फतेहपुर सीकरी का उल्लेख मिलता है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आगरा के सिविल न्यायालय सीनियर डिवीजन में फतेहपुर सीकरी में स्थित सलीम चिश्ती की दरगाह को कामाख्या माता का मंदिर और जामा मस्जिद को कामाख्या माता मंदिर परिसर बताते हुए नया दावा दायर किया गया है। यह नया दावा अधिवक्ता अजय प्रताप सिंह ने दायर किया है।

अधिवक्ता अजय प्रताप सिंह ने बताया कि केस में माता कामाख्या, आस्थान माता कामाख्या, आर्य संस्कृति संरक्षण ट्रस्ट, योगेश्वर श्रीकृष्ण सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान ट्रस्ट, क्षत्रिय शक्तिपीठ विकास ट्रस्ट और अधिवक्ता अजय प्रताप सिंह वादी है और प्रतिवादी संख्या 1. उत्तर प्रदेश सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड, विपक्षी संख्या 2. प्रबंधन कमेटी दरगाह सलीम चिश्ती, विपक्षी संख्या 3. प्रबंधन कमेटी जामा मस्जिद है। वर्तमान में विवादित संपत्ति भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधीन एक संरक्षित स्मारक है जिस पर सभी विपक्षीगण अतिक्रमणी हैं। फतेहपुर सीकरी का मूल नाम सीकरी है जिसे विजयपुर सीकरी भी कहते थे जोकि सिकरवार क्षत्रियों का राज्य था और विवादित संपत्ति माता कामाख्या देवी का मूल गर्भ गृह व मंदिर परिसर था। प्रचलित ऐतिहासिक कहानी के अनुसार फतेहपुर सीकरी को अकबर ने बसाया जोकि झूठ है , बाबर ने अपने बाबरनामा में सीकरी का उल्लेख किया था और वर्तमान में बुलंद दरवाजे के नीचे दक्षिण पश्चिम में एक अष्टभुजीय कुआं/बाओली है और दक्षिण पूर्वी हिस्से में एक गरीब घर है जिसके निर्माण का वर्णन बाबर ने किया है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अभिलेख भी यही मानते है। डी वी शर्मा जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधीक्षण पुरातत्वविद रहे हैं, उन्होंने अपने कार्यकाल में फतेहपुर सीकरी के बीर छबीली टीले की खुदाई की जिसमें उन्हें सरस्वती और जैन मूर्तियों मिली जिनका काल 1000 ईं के लगभग था। डी वी शर्मा ने अपनी पुस्तक "आर्कियोलॉजी ऑफ फतेहपुर सीकरी- न्यू डिस्कवरीज़" में इसका विस्तार से वर्णन किया है। इसी पुस्तक के पेज संख्या 86 पर वाद संपत्ति का निर्माण हिन्दू व जैन मंदिर के अवशेषों से बताया है। अग्रेज़ अधिकारी ई बी हावेल ने वाद संपत्ति के खम्भों व छत को हिन्दू शिल्पकला बताया है और मस्जिद होने से इंकार किया है। खानवा युद्ध के समय सीकरी के राजा राव धामदेव थे। खानवा युद्ध में जब राणा सांगा घायल हो गए तो राव धामदेव धर्म बचाने

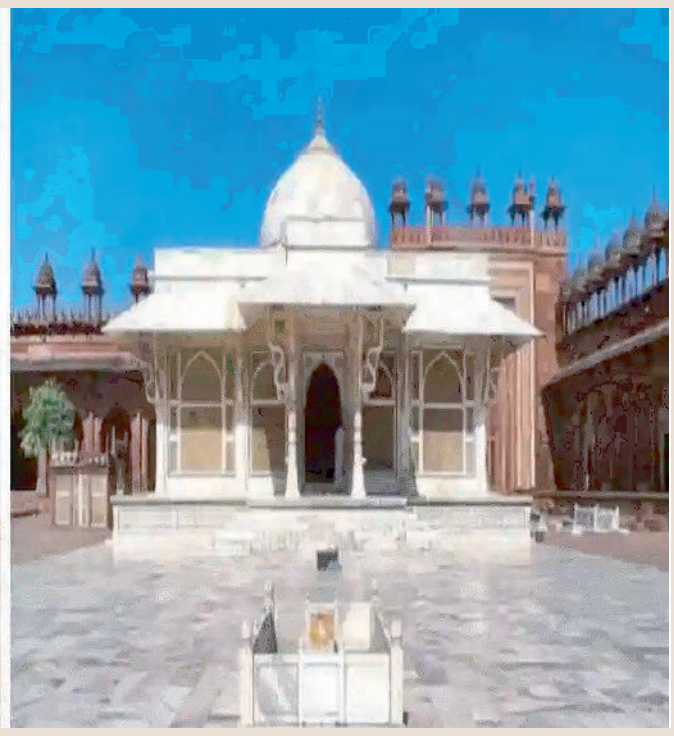

के लिए माता कामाख्या के प्राण प्रतिष्ठित विग्रह को ऊँट पर रखकर पूर्व दिशा की ओर गए और उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के गहमर में कामाख्या माता के मंदिर को बनाकर इस विग्रह को पुनः स्थापित किया। उस तथ्य का उल्लेख राव धामदेव के राजकवि विद्याधर ने अपनी पुस्तक में किया है। भारतीय कानून भी यही कहता है कि किसी भी मंदिर की प्रकृति को बदला नहीं जा सकता, यदि एक बार वो मंदिर के रूप में प्राण प्रतिष्ठित हो गया तो वह हमेशा मंदिर ही रहेगा। केस को माननीय न्यायाधीश श्री मृत्युंजय श्रीवास्तव के न्यायालय लघुवाद न्यायालय में पेश किया गया, जिसपर माननीय न्यायालय ने संज्ञान लेते हुए इश्यू नोटिस का आदेश किया व सुनवाई की अगली तिथि ऑनलाइन ई कोर्ट पर देखने को कहा गया।

आज सुनवाई के दौरान वादी व अधिवक्ता अजय प्रताप सिंह, वरिष्ठ अधिवक्ता राजेश कुलश्रेष्ठ, अधिवक्ता अभिनव कुलश्रेष्ठ व अजय सिकरवार उपस्थित रहे।

एसी के बिना ना रहने वाले जान लेंगे इसके नुकसान तो हो जाएगे हैरान

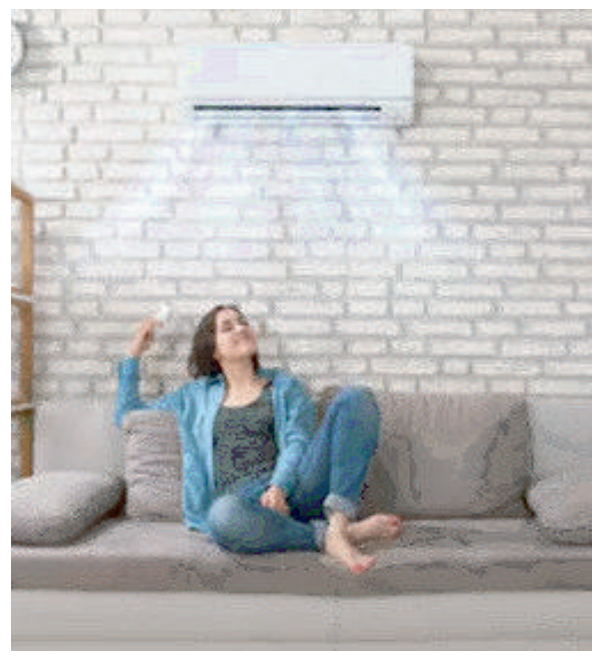

आजकल ज्यादातर लोगों को एसी की बहुत आदत हो गई है. बाहर से आने और गर्मी लगने पर लोग घर में सबसे पहले एसी चालू करते हैं या फिर बाहर यात्रा करते समय लोग कार में एसी का इस्तेमाल करते हैं. आफिस में भी एसी का इस्तेमाल खूब होता है ज्यादातर लोग एसी में ही रहना पसंद करते हैं. लेकिन ज्यादा समय एसी में बिताने के कारण कई बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है. ज्यादा समय एसी में बिताने के कारण सिरदर्द, सूखी खांसी, चक्कर आना या जी मिचलाना जैसी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है. आइए जानते हैं एसी हमारे शरीर को कैसे नुकसान पहुंचा सकता है.

डिहाइड्रेशन ज्यादा समय एसी में बिताने के कारण शरीर की सभी नमी सूख जाती है जिसकी वजह से आप डिहाईड्रेशन जैसी समस्याओं का सामना कर सकते हैं. इसके अलावा आपकी त्वाचा फटने और ड्राई होने लगती है.

सिरदर्द ज्यादा देर तक एसी में रहने या सोने से सिरदर्द का सामना करना पड़ सकता है. इसके अलावा पेट दर्द, पीठ दर्द, कमर दर्द जैसी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है.

सांस की समस्या अगर आप एसी में सोते हैं तो आपको कंजेशन हो सकता है जिससे सांस से जुड़ी बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है. गंभीर बीमारी से बचने के लिए कोशिश करें की एसी का उपयोग कम करें.

इम्यूनिटी इम्यूनिटी होती है कमजोर, ज्यादा समय एसी में रहने या सोने से इम्यूनिटी कमजोर हो जाती है जिसके कारण आप बार-बार बीमार होने लगते हैं. इसके अलावा शरीर में आलस आ जाता है.

थकान आमतौर एसी के वक्त खिड़की-दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं जिसकी वजह से ताजा हवा कमरे में प्रवेश नहीं कर पाती है. वेंटीलेशन ठीक न होने से आप थकान महसूस कर सकते हैं.

सर्दी-जुकाम कई लोग एसी का टेंपरेचर काफी कम रखते हैं जिसकी वजह से सर्दी-जुकाम का सामना करना पड़ सकता है.

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023